प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

www.mahikihunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

आजादी का कोई अर्थ नहीं है, यदि उसमें गलतियां करने की आजादी शामिल न हो...
-महात्मा गांधी

वर्ष-06, अंक-03 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 19 अक्टूबर 2023 | पृष्ठ-8, मूल्य-5 रुपए

21 तारीख को अधिसूचना के साथ ही फार्म भरने का सिलसिला होगा शुरू

माही की गूंज, संजय भटेवरा

झाबुआ। चुनावी कार्यक्रम की घोषणा तथा दोनों प्रमुख दलों के द्वारा आधे से अधिक प्रत्याशी घोषित किए जाने के बावजूद मैदानी स्तर पर चुनावी माहौल नहीं बन पाया है। जिसका मुख्य कारण है आम नागरिक का अपनी खेती बाड़ी में व्यस्त होना। चुनाव आयोग द्वारा घोषित कार्यक्रम के अनुसार 21 अक्टूबर को अधिसूचना जारी होने के साथ ही चुनावी समर में अपना भाग्य आजमाने वाले उम्मीद्वार अपना नामांकन फार्म ले सकेंगे और भरकर जमा करवा सकेंगे। नाम वापसी की समय सीमा 2 नवंबर तय की गई है। यानी चुनाव में प्रत्याशी को 3 तारीख से 15 तारीख तक का ही समय चुनाव प्रचार के लिए मिलेगा। जिसमें उन्हें लगभग 1.5 से 2 लाख वोटरों तक पहुंचना होगा। हालांकि वर्तमान सोशल युग में यह काम इतना मुश्किल नहीं है। लेकिन फिर भी प्रत्याशी के लिए प्रत्येक गांव और फलिए - फलिए तक पहुंचना आसान नहीं है, पर अगले पांच वर्ष ''जनसेवा'' करने के लिए इतना तो करना ही पड़ेगा। वहीं कुछ क्षेत्रों में प्रत्याशी अपनी बात कार्यकर्ताओं के द्वारा या मोबाइल के माध्यम से पहुंचा सकते हैं।

बदलेगा चुनाव प्रचार का ट्रेड

अभी तक परंपरागत तरीके से चुनाव प्रचार होता आया है। झंडा, बैनर, टोपी, गमछा और अन्य चुनावी सामग्री में अब सोशल मीडिया नया माध्यम जुड़ गया है। सोशल मीडिया के

माध्यम से भी प्रचार किया जा सकता है और इसके लिए सोशल मीडिया में विभिन्न ग्रुप के माध्यम से फेसबुक, एक्स प्लेटफार्म (ट्विटर) व अन्य रिल्स बनाने वाले सेलिब्रिटी प्रचार का माध्यम बन सकते हैं।

क्या 2018 का इतिहास दोहराएगा..?

जिले की दो सीटों पर कांग्रेस और भाजपा में वही पुराने चेहरों के बीच ही चुनाव लड़ा जाना है। ऐसे में कांग्रेस के दोनों उम्मीद्वार वीरसिंह भूरिया और वालसिंह मैडा के लिए अपनी सीट बचाने की चुनौती होगी। वहीं भाजपा के दोनों उम्मीद्वार कलसिंह भाभर व निर्मला भूरिया के लिए अपनी पिछली पराजय का बदला चुकाने का सुनहरा अवसर होगा। जहां तक निर्मला भूरिया का सवाल है तो उन्होंने एक बार वालसिंह मैडा को चुनावी मैदान में शिकस्त दी थी, लेकिन अब वह अतीत की बात हो चुकी हैं। वही वीरसिंह भूरिया भाजपा के कलसिंह भाभर को दो बार हरा चुके है, उनके लिए यह हैट्रिक बनाने का अवसर है। क्या वे हैट्रिक लगा पाएंगे...? यह तो भविष्य के गर्भ में है। लेकिन कलसिंह भाभर के लिए भी पिछली दो हार का बदला लेने का अवसर है। कलसिंह भाभर को एकजुट कांग्रेस के साथ ही अपनी ही पार्टी के असंतुष्टो से पार पाना भी बड़ी चुनौती है। विधानसभा क्षेत्र के दो सांसद प्रतिनिधियों ने पार्टी लाइन से हटकर सार्वजनिक रूप से पार्टी प्रत्याशी कलसिंह भाभर का विरोध किया है और शायद इसी विरोध के मद्देनजर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का थांदला दौरा तय हुआ है, अब इस दौरे के बाद क्या स्थिति बनती है यह तो नामांकन शुरू होने के बाद ही पता चल सकेगा। लेकिन इतना तो तय है कि, थांदला विधानसभा में भाजपा के लिए सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। वहीं कांग्रेस में इसके ठीक उलट स्थिति रही है, कांग्रेस प्रत्याशी घोषित होने के बाद अभी तक किसी नेता का कोई बयान नहीं आया है और पार्टी पूरी तरह एकजुट दिखाई दे रही है। जिले में कांग्रेस थांदला विधानसभा को सबसे सेफसीट मान रही है। अब यह कितने सेफहै यह तो 3 दिसंबर को ही पता चल सकेगा।

पेटलावद व झाबुआ में कांग्रेस प्रत्याशी का भी विरोध

कांग्रेस का टिकट घोषित होने के पेटलावद व झाबुआ प्रत्याशी का विरोध कांग्रेस कार्यकर्ता और नेताओं द्वारा किया जा रहा है और यह विरोध किस स्तर तक पहुंचता है यह तो समय ही बता पाएगा। लेकिन नाम वापसी तक दोनों ही दलों को असंतुष्टों को साधने अपने आप में एक बड़ी चुनौती होगी और दोनों ही दलों में जो दल असंतुष्टो को साधने में ज्यादा सफल होगा उसके सफल होने की ज्यादा संभावना रहेगी। 2 नवंबर के बाद प्रत्याशी जनता की अदालत में सवालों के जवाब देना होगा। दावे, आरोप, प्रत्यारोप का सिलसिला शुरू होगा। तेरी शर्ट से ज्यादा मेरी शर्ट सफेद है की तर्ज पर आरोप, प्रत्यारोप लगेंगे और सभी उम्मीद्वारों की बात को ध्यान में रखकर जनता अपना फैसला 17 नवंबर को सुनाएगी।

साढ़े 7 मिनिट की हुई शिव की सभा, कन्याओं की नहीं की पूजा, रोड़ शो भी हुआ निरस्त

माही की गूंज थांदला, मुकेश भट्ट

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बुधवार को झाबुआ जिले के थांदला में रोड शो कर समीपस्थ स्वयं भू माता मंदिर मैदान पर कार्यकर्ताओ को संबोधित करने पहुंचे। कार्यक्रम 2:55 बजे पर हेलीकाप्टर से थांदला पहुंचना निर्धारित था, किंतु करीब सवा घंटे देरी से मुख्यमंत्री 4:9 बजे पहुंचे। जेसे ही मुख्यमंत्री हेलीपेड पर पहुंचे, भाजपा जिला कार्यवाहक अध्यक्ष प्रवीण सुराना, तीनों भाजपा के विधानसभा प्रत्याशी निर्मला भूरिया, भानु भूरिया, कलसिंह भाभर ने उनका स्वागत किया।

नहीं हुआ रोड़ शो

तय कार्यक्रम अनुसार मुख्यमंत्री को हेली पेट से होकर नगर के अस्पताल चौराहा, आजाद चौक, पीपली चौराहा से दीपमाला होकर पुरानी मंडी के रास्ते खजुरी होकर स्वयं भू माता मंदिर पहुंचना था। लेकिन मुख्यमंत्री ने समय की नजाकत देख सीधे सभा स्थल स्वयं भू माता पहुंचने की बातकर जिला भाजपियो सहित नगर वासियों को चौका दिया और सीधे अपने काफ्लि के साथ कार्यक्रम स्थल पहुंचे। सबसे पहले माता के दरबार में मत्था टेका और मंच पर बमुश्किल साढ़े 7 मिनिट का भाषण कर पुनः हेलीपेड के लिए रवाना हो गए। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम हेतु वृहद पैमाने पर तैयारिया की गई थी। अपने संक्षिप्त भाषण में मुख्यमंत्री ने लाडली बहना योजना का जिक्र करते हुए मंदिर को स्वयंभू माता लोक बनाने की बात कही। साथ ही आमजनता से जिले के तीनो भाजपा प्रत्याशियों को विजय बनाने की अपील की। वही सीएम के इस आयोजन में सबसे बड़ा चर्चा का विषय यह रहा कि, जो मामा अपनी भांजियो की पुजा करते है। मुख्यमंत्री जी नौ दुर्गा महोत्सव के दौरान कुवारी कन्याओ का पुजन करेगे की भावना के साथ स्थानिय भाजपाईयो ने कुवारी कन्याओ को सज धज कर बुलाया था परन्तु मामा जी प्रदेश की सत्ता पाने के लिए इतने मसरूफथे की वे कुवारी कन्याओ का बिना पुजन करे ही रवाना हो गये जो चुनाव के दौरान चर्चा का विषय बन गया।

सरकार के सब फैसले ठीक है तो अदालत की क्या जरूरत- चीफजस्टिस

नई दिल्ली।

लोकतंत्र को सिर्फ चुनावी चश्मे से नहीं देखा जा सकता। यदि संसद और सरकार की ओर से लिए गए सारे फैसले लोकतांत्रिक ही हों तो फिर अदालतों की तो कोई जरूरत ही नहीं रह जाएगी। सेम सेक्स मैरिज के मामले में सुनवाई करते हुए चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने यह टिप्पणी की। दरअसल, केस की सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार के वकील ने कहा था कि अदालतें एजीबीटी कपल्स के अधिकारों पर फैसला नहीं दे सकतीं। ऐसा करना अलोकतांत्रिक होगा। इसी के जवाब में चीफजस्टिस ने यह बात कही। मुख्य न्यायाधीश ने अपने फैसले में कहा, यदि चुनी हुई सरकार के सभी फैसले पूरी तरह लोकतांत्रिक ही हों और मूल अधिकारों के उद्देश्य को पूरा करते हों तो फिर अदालतों की क्या जरूरत है, जिनका काम ही कानून की व्याख्या करना है। अदालत का तो काम ही यही है कि जब सरकार संवैधानिक मसलों पर गलती करे तो उसके फैसलों की समीक्षा करे। उन्होंने कहा कि, हमारे संविधान में ही ऐसे लोकतंत्र की बात कही गई है, जिसमें सभी की जरूरत है। हमारा संविधान यह नहीं कहता कि संवैधानिक लोकतंत्र का अर्थ सिर्फ चुनावी डेमोक्रेसी है। दूसरे संस्थानों की भी अपनी भूमिका है और वे सरकार के फैसलों की समीक्षा कर सकते हैं। संविधान में लोकतंत्र की कोई संकीर्ण परिभाषा तय नहीं की गई है। यही नहीं उन्होंने समलैंगिक विवाह के मामले में केंद्र सरकार की राय को भी संकीर्ण बताया। उन्होंने कहा कि, लोकतंत्र को लेकर आपकी परिभाषा ठीक नहीं है और यह संकीर्ण मानसिकता है। उन्होंने कहा कि देश में शिक्षा का अधिकार कानून अदालत के दखल के बाद ही बना था और फिर इसे मूल अधिकार के तौर पर लागू किया जा सका। गौरतलब है कि, लंबी सुनवाई के बाद अदालत ने समलैंगिक शादियों की मान्यता को लेकर फैसला दिया था। कोर्ट ने समलैंगिक शादियों की मान्यता की मांग खारिज करते हुए कहा था कि यह काम अदालत का नहीं है। हम संसद की तरह कानून नहीं बना सकते और ना ही संसद पर इसके लिए दबाव डाल सकते। हालांकि कोर्ट ने समलैंगिक शादियों की मान्यता को लेकर सरकार को कमेटी बनाने का सुझाव दिया है।

राहुल गांधी ने अडानी पर 32 हजार करोड़ की चोरी का लगाया आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी।

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने बुधवार को कारोबारी गौतम अडानी के मुद्दे पर केंद्र सरकार को जमकर घेरा। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मामले पर सफाई पेश करने की मांग की है। साथ ही उन्होंने एक विदेशी अखबार की रिपोर्ट का हवाला देकर कारोबारी समूह के मुखिया पर 32 हजार करोड़ रुपये की 'चोरी' के आरोप लगाए हैं। राहुल ने एक फाइनेंशियल अखबार की रिपोर्ट दिखाकर आरोप लगाए हैं कि, अडानी समूह गलत कीमत दिखाकर ज्यादा पैसा वसूल रहा है। उन्होंने कहा, अडानी जी इंडोनेशिया में कोयला खरीदते हैं और जब तक वो कोयला हिंदुस्तान पहुंचता है, तो उसका रेट बदल जाता है। डबल हो जाता है। ऐसे तकरीबन 12 हजार करोड़ रुपये अडानी जी ने जनता की जेब से निकाला है। कैसे? कोल प्राइस को गलत दिखाकर यहां बिजली के दामों को बढ़ाकर। राहुल इससे पहले भी

20 हजार करोड़ की चोरी के आरोप अडानी समूह पर लगा चुके हैं।

अडानी के कारोबार पर ये बोले राहुल

बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जब सवाल पूछा गया कि, इंडिया गठबंधन की सरकार पर आने पर अडानी कारोबार कर पाएंगे या नहीं...? क्या सरकार उनकी जांच कराएगी...? इस पर वायनाड सांसद ने कहा, बिल्कुल करवाएंगे। यह अडानी जी की बात नहीं है...। कोई भी 32 हजार करोड़ रुपये चोरी करेगा, तो उसकी जांच होगी। राहुल ने आरोप लगाए हैं कि, अडानी जी की 'रक्षा प्रधानमंत्री कर रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'पीएम अडानी जी की जांच क्यों नहीं करा रहे हैं। हमने संसद से जनसभाओं तक यह बात उठाई।' उन्होंने कहा, '...अडानी जी को सुरक्षा दी जा रही है, वह सिर्फएक व्यक्ति दे सकता है और दूसरा कोई नहीं दे सकता...। मैं प्रधानमंत्री की मदद करने की कोशिश कर रहा हूं। मैं उनसे कह रहा हूं की सफाई दीजिए...।'

क्या लड़कियों की शादी की उम्र बढ़ाई जाएगी... ?

नई दिल्ली, एजेंसी।

महिलाओं की शादी की उम्र मौजूदा 18 से बढ़ाकर 21 वर्ष करने वाले विधेयक की जांच कर रही संसदीय समिति को अपनी रिपोर्ट पेश करने के लिए तीन महीने का नया विस्तार दिया गया है। बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक 2021 को दिसंबर 2021 में लोकसभा में पेश किया गया था और इसे शिक्षा, महिलाओं, बच्चों, युवाओं और खेल पर स्थायी समिति को भेजा गया था।

पहले भी समिति को अपनी रिपोर्ट को अंतिम रूप देने के लिए विस्तार दिया गया है। जारी राज्यसभा बुलेटिन के मुताबिक, सदन के सभापति जगदीप धनखड़ ने विधेयक की जांच करने और अपनी रिपोर्ट पेश करने के लिए पैनल को 24 जनवरी 2024 तक तीन महीने का और अधिक समय दिया है। शिक्षा, महिला, बच्चे, युवा और खेल संबंधी स्थायी समिति राज्य सभा सचिवालय के अधीन कार्य करती है। विधेयक पेश करने के तुरंत बाद महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने लोकसभा अध्यक्ष से विधेयक को विस्तृत जांच के लिए स्थायी समिति को भेजने का अनुरोध किया था। ईरानी ने सदन को बताया था कि, सरकार पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता लाना चाहती है। उन्होंने कहा था कि यह विधेयक विवाह के संबंध में पार्टियों को नियंत्रित करने वाले किसी भी रीति-रिवाज, उपयोग या प्रथा सहित सभी मौजूदा कानूनों को खत्म करने का प्रयास करता है।

गाजा में अस्पताल पर हुए हमले की पीएम ने की निंदा

नई दिल्ली।

इजरायल-हमास युद्ध के दौरान गाजा के एक अस्पताल पर हुए हमले में 500 लोगों की जान चली गई थी। पूरी दुनिया ने इसकी निंदा की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि, जो भी इसमें शामिल है, उसे जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। आपको बता दें कि हमास ने इजरायली सेना पर इसका आरोप लगाया है। वहीं, प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने इसके लिए हमास के आतंकियों को जिम्मेदार ठहराया है। आरोप-प्रत्यारोप के बीच बुधवार को पीएम मोदी ने ट्वीट कर इसकी निंदा की है। उन्होंने कहा, गाजा के अल अहली अस्पताल में लोगों

की मौत से गहरा सदमा लगा है। पीड़ितों के परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना है। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करता हूं। इस युद्ध में नागरिकों की मौत होना गंभीर और निरंतर चिंता का विषय है। इसमें शामिल लोगों को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। वहीं, संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष नेताओं और एजेंसियों ने गाजा के एक अस्पताल पर हुए हमले में कई नागरिकों की मौत को लेकर गहरा दुःख जताया और घटना की कड़ी निंदा की है। यूएन ने अस्पतालों या असैन्य बुनियादी ढांचों पर हमले अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का उल्लंघन है। साथ ही निकाय ने इस घटना को अंजाम देने वालों को अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार जवाबदेह ठहराने का आह्वान किया है।

दिवाली की खुशियों में प्रशासन का खलल

माही की गूंज झाबुआ, मुज्जमील मंसूरी

दीपावली भारत देश का एक प्रमुख त्यौहार है। यह खुशियों का पर्व है और खुशियां बांटने से बढ़ती है, खुशियां मिठाई और आतिशबाजी के बगैर अधूरी है। बहुचर्चित पेटलावद ब्लास्ट के बाद आतिशबाजी को लेकर प्रशासन ने सख्त निर्णय लिए है और सख्त निर्णय लेना भी चाहिए। लेकिन सख्त निर्णय तर्कसंगत और समय अनुकूल होना चाहिए तथा निर्णय और नियम शासन और प्रशासन द्वारा आम जनता की सुविधा के लिए ही बनाए जाते हैं, न कि उनको परेशान करने के लिए। नोटबंदी और कोरोनाकाल में शासन ने जनता के हितों को देखते हुए कई बार नियम बदले और बनाये। चूकि सभी निर्णय जनता के हित के लिए थे जिसका आम जनता ने स्वैच्छिक पालन किया।

लेकिन वर्तमान में दीपावली त्यौहार नजदीक है और दीपावली पर पूरे देश में आतिशबाजी की जाती है और आतिशबाजी को लेकर प्रशासन द्वारा कुछ कड़े नियम लागू किए गए है, जो आम जनता के साथ ही पटाखा के थोक व्यापारी के साथ ही फुटकर व्यापारी और सीजनल धंधा करने वाले के लिए गले की फास बना हुआ हैं। आमतौर सरकार दो तरह के लाइसेंस जारी करती है जिसमें एक है बारहमासी लाइसेंस व दूसरा है सीजनल लाइसेंस। पहला लाइसेंस बनना आम व्यापारी के लिए टेढ़ी खीर है और अमूमन यह बड़े शहरों में और बड़े विक्रेताओं को जारी किया जाता है। जिसमें व्यापारी शहर के बाहर गोदाम बनाकर उसमें स्टॉक रख सकता है और वर्ष भर बेच सकता है। झाबुआ जिले के संदर्भ में देखे तो पूरे जिले में केवल एक लाइसेंस ऐसा बना हुआ है। वही दूसरा लाइसेंस सीजनल लाइसेंस हे जो अमूमन दिवाली के आसपास लगभग 15 से 20 दिन की वैधता वाला होता है। जिसे छोटे गांव से लेकर बड़े शहरों तक में कुछ निश्चित शर्तों के साथ जारी किया जाता है और यह लाइसेंस प्राप्त आवेदनों के आधार पर संबंधित ग्राम पंचायत के अनुमोदन के आधार पर जारी किए जाते हैं। लेकिन सबसे ज्यादा परेशानियां इन्हीं आवेदनों को लेकर आती है। वहीं छोटा व्यापारी

पटाखा लाइसेंस प्रणाली विसंगति पूर्ण

अनुमति लेकर व्यापार करने के बावजूद विसंगति पूर्ण आदेशों के चलते गुनहगार बन जाता है। आमतौर पर भारत में छोटे व्यापारी होते हैं तो ठेले पर सीजन के अनुसार व्यवसाय कर अपनी आजीविका का निर्वहन करते हैं और पटाखे की बिक्री आमतौर पर नवरात्र में ही प्रारंभ हो जाती है। जगह-जगह होने वाले रावण दहन कार्यक्रम में भी पटाखे की आवश्यकता रहती है और किसी भी व्यापार को करने के लिए समय पूर्व तैयारी आवश्यक है। जिसमें हमारी देशी भाषा में कहा जाता है कि, 'पानी के पहले पाल बांधना' और इसलिए दीपावली के पहले व्यापारी को माल खरीदना होता है और उसका स्टॉक करना पड़ता है। लेकिन प्रशासन लाइसेंस जारी ही आखरी वक्त पर दीपावली के पहले करता है, जिससे छोटे व्यापारी के लिए व्यवस्था करना मुश्किल हो जाता है। यही नहीं अगर व्यापारी दीपावली के पहले अगर माल खरीदता है तो उसका स्टॉक कहां करें....? यही नहीं दीपावली के बाद अगर कुछ माल बच जाता है तो उसको कहां रखें....? उपयोग करें...? या वापस थोक व्यापारी को लौटाए...? अगर प्रशासन पटाखे का स्टॉक रखवाने की व्यवस्था न करवा पाए तो उनका क्या करें...?

प्रशासन की इस विसंगति पूर्ण नीति के चलते छोटे व मझले व्यापारी न चाहते हुए भी प्रशासन की आंख की किरकिरी बन जाते हैं और प्रशासन के नुमाइंदे उन्हें परेशान करने में कोई कसर नहीं छोड़ता है और प्रशासन की नजर में एक ईमानदार व्यापारी भी जमाखोर, अवैध व्यवसाय बन जाता है। ऐसी स्थिति को देखते हुए प्रशासन को चाहिए कि, वे आतिशबाजी को लेकर तर्कसम्मत, सामयिक और जनहितेशी के साथ ही छोटे व्यापारी को ध्यान में लेकर निर्णय बनाए। जिससे व्यापारी बेखोफ होकर अपना व्यापार, व्यवसाय कानूनी नियमों के तहत कर सके। सरकार पटाखों पर 18 प्रतिशत की दर से जीएसटी की वसूली करती है और यह व्यवसाय सरकार के लिए भी फायदेमंद है तो सरकार को इसके लिए अनुकूल नियम भी बनाए जाने चाहिए।

ओल्ड हाउसिंग बोर्ड कालोनी में होगा 108 कन्याओं का भोज

माही की गूंज, झाबुआ

स्थानीय शिवालय सेवा समिति धार्मिक आयोजनों में बढ़ चढ़कर सहभागिता कर रही है। इसी क्रम में 19 अक्टूबर शारदेय नवरात्री की पंचमी को नगर की ओल्ड हाउसिंग बोर्ड कालोनी में स्थित चमत्कारिक मां जगदंबा मंदिर नवदुर्गा धाम पर आज प्रातः 10 बजे से समिति द्वारा 108 कन्या भोज का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन को लेकर समिति के सदस्य द्वारा तैयारियां की गई। कन्या भोज के बारे में नगर के ज्योतिषाचार्य पण्डित द्विजेन्द्र व्यास का कहना है कि, वैसे तो कुछ लोग नवरात्रि के दौरान हर दिन ही कन्या पूजन कराते हैं, लेकिन नवरात्री की पंचमी, दुर्गा अष्टमी और नवमी के दिन इसका विशेष महत्व होता है।. शास्त्रों में बताया गया है कि, इन दिनों के दौरान कन्याओं को भोजन कराने से माता रानी प्रसन्न होती है और यह भोजन माता रानी तक ही पहुंचता है। कन्या भोजन में माता की पसंद के पकवान बनाए जाते हैं। शिवालय सेवा समिति ओल्ड हाउसिंग बोर्ड कालोनी के पदाधिकारियों ने नगर की धर्मप्रेमी जनता से अनुरोध किया है कि, कालोनी स्थित माता दुर्गाजी के चमत्कारिक मंदिर में आयोजित 108 कन्या भोज के अनुष्ठान कार्यक्रम में दर्शनार्थ पधारे और धर्मलाभ लेवें ।

दिग्विजय-कमलनाथ की कपड़ा फाड़ राजनीति पर ये बोले सिंधिया

ग्वालियर।

हाल ही में पार्टी के दो दिग्गज नेताओं कमलनाथ और दिग्विजय सिंह के बीच कपड़ा फाड़ सियासत वाली बात को लेकर कई प्रतिक्रियाएं अब तक सामने आ

चुकी है। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि, यह उनका काम है कि हर चीज को पकड़-पकड़ कर फाड़ें लेकिन मेरी सोच हमेशा सकारात्मक रही है इसलिए वह अपना काम देखें और हम अपना काम देख रहे हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि, नकारात्मकता कांग्रेस में ही देखने को मिलती है इसलिए मेरा सोचना है कि जो समय हमें पृथ्वी पर मिला है उसका सदुपयोग लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने में किया जाए।

राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और दिग्विजय सिंह के बीच कपड़ा फड़ने को लेकर हुई टीका-टिप्पणियों पर उन्होंने कहा कि, अगर दो लोगों के बीच इस स्थिति पर चर्चा हो रही है तो सोचिए अगर इनके हाथ में शासन आ जाए तो जनता का क्या हाल होगा...? कांग्रेस पार्टी द्वारा जारी किए गए वचन पत्र पर उन्होंने कहा कि वचन पत्र इतनी बड़ी गहरी खाई है कि कांग्रेस की वचन की लिस्ट लगातार लंबी होती जा रही है लेकिन कभी पूरी नहीं होती। मेनिफेस्टो बनाना और लुभावने मुद्दों को उसमें डालना आसान है लेकिन वचन निभाने कठिन है।

ग्वालियर दक्षिण से कुछ भारतीय जनता पार्टी के नेताओं द्वारा सिंधिया से चुनाव लड़ने की अपील करने पर उन्होंने कहा कि, पार्टी की सोच यही है कि जो संगठन तय करता है हर कार्यकर्ता को उसके मार्गदर्शन में काम करना होता है। पिछले तीन-चार महीने में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष, केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और सांसद विवेक सेजवलकर के साथ ही एक-एक कार्यकर्ता पूर्ण लगन से लगा हुआ है और इस लग्न से हमें आगे भी काम करना है।

बाढ़ में मरने वालों की संख्या हुई 40, अब भी 76 लापता

गंगटोक, एजेंसी।

हाल ही में सिक्किम में अचानक आई बाढ़ ने पूरे राज्य को तबाह कर दिया है। आज भी लगातार इसमें मरने वालों के शव बरामद हो रहे हैं। आपदा के लगभग दो सप्ताह बाद अधिकारियों ने कहा कि उन्हें दो और शव बरामद हुए हैं, जिसके बाद बाढ़ में मरने वालों की संख्या 40 हो गई है। वहीं, आपदा के लगभग दो सप्ताह बाद भी 76 लोग लापता हैं।

4 अक्टूबर के तड़के सुबह बादल फटने से तीस्ता नदी में अचानक बाढ़ आ गई, जिसने राज्य को तबाह कर दिया और इससे लगभग 88 हजार लोग प्रभावित हुए है। 2011 की जनगणना के मुताबिक, सिक्किम की जनसंख्या लगभग 6.10 लाख है, जो भारत के किसी भी राज्य की तुलना में सबसे कम है। बाढ़ की चपेट में आकर मरने वाले ज्यादातर लोगों के शव पाक्योंग में मिले हैं। सिक्किम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसएसडीएमए) के मुताबिक, जिले में पाए गए 26 शवों में से 15 नागरिकों के थे, जबकि 11 सेना के जवानों के थे।

बंगाल पहुंचे शव

बुलेटिन में कहा गया कि, चार शव मंगन में, आठ शव गंगटोक में और दो शव नामची में मिले हैं। अधिकारियों ने बताया कि पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में भी तीस्ता नदी के निचले इलाकों में कई शव बहकर पहुंचे हैं। लापता 76 लोगों में से 28 पाक्योंग से, 23 गंगटोक से, 20 मंगन से और पांच नामची से हैं। एसएसडीएमए ने कहा कि, वर्तमान में, राज्य में 20 राहत शिविर चल रहे हैं, जहां 2 हजार 80 लोगों ने शरण ली है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) के मुताबिक, ज्यादा बारिश और उत्तरी सिक्किम में दक्षिण लहोनक झील में ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ) घटना के एक साथ हो जाने से अचानक बाढ़ आई है।

मनीष सिसोदिया के खिलाफ आरोप साबित करना होगा मुश्किल..

नई दिल्ली, एजेंसी।

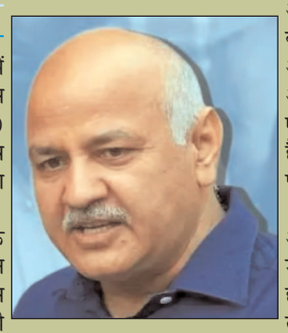

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि, अगर दिल्ली आबकारी नीति में बदलाव के लिए कथित तौर पर दी गई रिश्वत प्रेडिकेट आफेंस (ऐसा अपराध जो अपराधों की सीरीज का पहला अपराध हो) का हिस्सा नहीं है तो ईडी को दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के खिलाफमनी लांड्रिग का आरोप साबित करना मुश्किल होगा।

पीठ ने ईडी से कहा कि, वह रिश्वत दिए जाने की धारणा के आधार पर आगे नहीं बढ़ सकती है और आरोपित को कानून के तहत जो भी सुरक्षा प्राप्त है, वह दी जानी चाहिए। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस एसवीएन भट्टी की पीठ ने दिल्ली आबकारी नीति घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार एवं मनी लांड्रिग के मामलों में सिसोदिया की दो अलग-अलग नियमित जमानत याचिकाओं पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया।

पीठ ने यह टिप्पणी तब की जब सिसोदिया की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक सिंघवी ने कहा कि मनी लांड्रिंग एक्ट के तहत रिश्वत का आरोप प्रेडिकेट आफेंस नहीं है और अगर प्रेडिकेट आफेंस नहीं है तो ईडी का वहां क्या काम? पीठ ने सीबीआइ और ईडी की ओर से पेश एडिशनल सालिसिटर जनरल एसवी राजू से कहा, अगर दी गई रिश्वत प्रेडिकेट आफेंस नहीं है तो आपको पीएमएलए के तहत मामला साबित करने में परेशानी हो सकती है।

सिंघवी ने सुनवाई के दौरान दलील दी कि, अपराध की आय से सीधे तौर पर सिसोदिया का कोई संबंध नहीं है और उनके भागने का कोई खतरा नहीं है, इसलिए वह जमानत के हकदार हैं। उन्होंने कहा, जब सुनवाई अभी शुरू ही नहीं हुई है तो आप उन्हें (सिसोदिया) अनंत काल तक जेल में नहीं रख सकते। इस मामले में 500 गवाहों और 50 हजार दस्तावेजों की जांच होनी है और उनसे मुझे जोड़ने वाला कोई सुबूत नहीं है। राजू ने आप नेता को जमानत दिए जाने का विरोध करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार और मनी लांड्रिंग मामलों की सुनवाई नौ से 12 महीनों में पूरी हो सकती है।

चुनाव में कई सीटों पर बराबर मुकाबला, बीजेपी-कांग्रेस के साथ क्या 'खेल' कर सकती हैं रीजनल पार्टियां...

भोपाल

मध्य प्रदेश में वैसे तो दो प्रमुख दल भाजपा और कांग्रेस ही लंबी पारी खेलते आ रहे हैं। यहां हमेशा कांग्रेस या बीजेपी में से ही किसी पार्टी की सरकार रही है। इस प्रदेश में इन दोनों पार्टियों के अलावा कोई भी पार्टी कभी इस स्तर पर नहीं उभरी कि अपनी सरकार बना सके या किसी सरकार में बहुत महत्वपूर ्भूमिका निभा सके। हालांकि पिछले कुछ सालों से ये समीकरण बदलते नजर आ रहे हैं। बीते मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में लगभग 30 सीटों पर जीत का अंतर 3 हजार वोटों से कम था। इनमें से 15 सीटें कांग्रेस ने और 14 सीटें बीजेपी ने जीतीं, जबकि बसपा ने 1 सीट जीती। वहीं, साल 2013 में हुए मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने जीत हासिल की थी। लेकिन इसमें 33 ऐसी सीटें थीं उम्मीदवार 3 हजार से कम

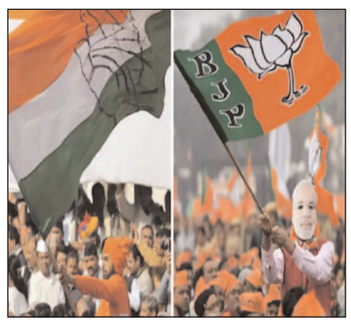

वोटों के अंतर से विजेता बने। इस चुनाव में 33 में से बीजेपी ने 18 सीटें, कांग्रेस ने 12, बीएसपी ने 2 और एक निर्दलीय ने 1 सीट जीती थी। ऐसे में इस बात से झुठलाया नहीं जा सकता है कि राज्य चुनाव में छोटी पार्टियों की भूमिका अहम हो सकती है। इनमें बसपा शामिल है, जिसने क्षेत्रीय गोंडवाना गणतंत्र पार्टी (जीजीपी) के साथ गठबंधन किया है। इसके आलवा समाजवादी पार्टी, जो इंडिया गठबंधन में है वह कांग्रेस के साथ साझेदारी करने की योजना विफल होने के बाद मध्य प्रदेश में 30 सीटों पर चुनाव लड़ने पर विचार कर रही है। साल 2013 और 2018 में जिन 7 सीटों पर एक ही पार्टी जीती थी, उनमें से 2018 में कांग्रेस ने 4 और बीजेपी ने 3 सीटें जीतीं। 2018 में कई निर्वाचन क्षेत्रों में जो कम अंतर से जीते गए थे, क्षेत्रीय दलों को जीतने वाले उम्मीद्वार की जीत के अंतर से अधिक वोट मिले। 17 नवंबर को होने वाले चुनाव में सपा ने अब तक 9 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। इनमें से 3 पर 2018 में कांग्रेस ने जीत हासिल की थी। कांग्रेस ने भी उन 9 सीटों में से 5 पर उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है, जिन पर सपा ने अपने उम्मीदवार उतारे हैं।

अनोखा अंदाजः हर घर से एक रुपया और खाना मांगकर खा रहे ऊर्जा मंत्री

ग्वालियर

कांग्रेस ने ग्वालियर में अभी अपना प्रत्याशी घोषित नहीं किया है। लेकिन भाजपा ने अपने मौजूदा विधायक और प्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर को मैदान में उतार दिया है। अपनी अलग शैली के लिए चर्चा में बने रहने वाले तोमर ने अपना चुनाव प्रचार भी अपने ही अंदाज में शुरू किया है। तोमर वोट मांगते समय हर घर से एक रुपया मांग रहे हैं। वह भोजन का समय होने पर किसी के भी घर से खाना मांगकर खा रहे हैं। बीजेपी प्रत्याशी तोमर सुबह ही अपने समर्थकों के साथ अपने ग्वालियर विधानसभा क्षेत्र में डोर टू डोर जनसंपर्क पर निकल जाते हैं। वे हर घर पर मिलने वाले बुजुर्गों और महिलाओं के चरण छूकर आशीर्वाद मांगते हैं। फिर चुनाव के लिए एक रुपया मांगते हैं। तोमर इसे क्षेत्र के लोगों का आशीर्वाद मानते हैं। वह कहते हैं कि उनका चुनाव सदैव क्षेत्र की जनता लड़ती है और यह राशि उसी की प्रतीक है।

नाम निर्देशन के सम्बन्ध में विडियो कांफ्रेंसिंग आयोजित

माही की गूंज, झाबुआ

उप मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश के आदेशानुसार नाम निर्देशन के सम्बन्ध में विडियो कांफ्रेंसिंग आयोजित की गई।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी विधानसभा निर्वाचन 2023 के कार्यक्रम अनुसार 21 अक्टूबर से नाम निर्देशन प्राप्त किये जाने है के सम्बन्ध में 18 अक्टूबर को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आयोजित की गई। वीडियो कांफ्रेंसिंग में नाम निर्देशन के दौरान रखी जाने वाली सावधानियों से अवगत करवाया गया। साथ ही अभ्यर्थियों को सुविधा ऐप पर ऑनलाइन नॉमिनेशन की प्रक्रिया ,ऑनलाइन डाटा प्रविष्टि के चरणों की जानकारी प्रदान की गई। आरओ. स्तर पर ऑनलाइन नॉमिनेशन हेतु आवश्यक विशिष्ट तकनीकी संसाधनों का सेटअप तैयार रखे जाने हेतु निर्देशित किया गया। अभ्यर्थियों को नामांकन फार्म के साथ प्रस्तुत किए जाने वाले दस्तावेज एवं नामांकन उपरांत अभ्यर्थियों को दिए जाने वाले दस्तावेजों , प्रारूप 7 के साथ दिए जाने वाले दस्तावेजों के संबध में बताया।

विडियो कांफ्रेंसिंग के दौरान कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री तन्वी हुड्डा, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती अंकिता प्रजापति, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पेटलावद अनिल राठौर, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व झाबुआ हरिशंकर विश्वकर्मा, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व थान्दला तरुण जैन एवं सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित थे।

शिवराज की पांचवी शपथ में कितने विध्न, कितनी बाधाएं

नरेंद्र तिवारी सेंधवा(बडवानी)

भाजपा आलाकमान के लिए शिवराज अमृत या हलाहल

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को लेकर अनेकों तरह की चर्चाओं का बाजार गर्म है। इन चर्चाओं को भाजपा आलाकमान की कार्यप्रणाली से अधिक बल मिलता दिखाई दे रहा है। एमपी की राजनीति में सबसे बड़ा सवाल यह बना हुआ कि, चार बार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के पद की शपथ ग्रहण कर चुके प्रदेश के मामा याने की शिवराज सिंह चौहान पांचवी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण कर पाएंगे या नहीं...? शिवराज की पांचवी शपथ में कितने विध्न और कितनी बाधाएं है। शिवराज की राह में रोड़ा बनी इन विध्न बाधाओं पर नजर दौड़ाई तो तो पाया कि, एमपी में 17 नवम्बर को विधानसभा की 230 सीटों पर मतदान होना है। दिसम्बर की 3 तारिख को परिणाम घोषित होगा। विधानसभा चुनाव को अब जबकि एक माह से भी कम समय शेष है। प्रदेश की सत्ता पर काबिज भाजपा के आलाकमान की नीति मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पीछे धकेलती दिखाई दे रही है। वह शिवराज जिन्होंने एमपी में सबसे अधिक समय मुख्यमंत्री रहने का रिकार्ड बनाया है। वह शिवराज जो एमपी से करीब 5 बार विदिशा से लोकसभा सदस्य रह चुके। वह शिवराज जो भाजपा के सांगठनिक पदों का भी लम्बा अनुभव रखते है। एमपी में मामा के नाम से विख्यात मुख्यमंत्री शिवराज सिंह जनता के परिचित और चुनाव जिताऊ चेहरे माने जाते रहे है। प्रदेश की राजनीति के अमृत समझे जाने वाले शिवराज क्या अब भाजपा के लिए अमृत नहीं रहे ? भाजपा आलाकमान की अब तक कि नीति तो यहीं दर्शाती प्रतीत हो रही है। जिसके अनुसार मुख्यमंत्री शिवराजसिंह को कमतर और किनारे करने की तस्वीर बनती दिखाई दे रही है। इसका उदाहरण 21 अगस्त को भोपाल के दौरे पर भाजपा के वरिष्ठ नेता गृह मंत्री अमित शाह से जब पत्रकारों ने पूछा था कि आगामी विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की और से मुख्यमंत्री का चेहरा कौन होगा...? उन्होंने इसके जवाब में कहा शिवराज अभी मुख्यमंत्री हैं ही, चुनाव के बाद मुख्यमंत्री कौन होगा, ये पार्टी का काम है और पार्टी ही तय करेगी। भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह के बयान के सीधे मायने यह निकाले जा रहे है कि एमपी में शिवराज के चेहरे पर भाजपा 2023 का विधानसभा चुनाव नही लड़ने जा रही है। इसी क्रम में 25 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कार्यकर्ता महाकुंभ में शामिल हुए। भोपाल के जम्बूरी मैदान में 40 मिनिट दिए अपने भाषण में प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का नाम एक बार भी नही लिया। इसे लेकर प्रदेश के मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने आरोप लगाया की प्रधानमंत्री ने शिवराज के नाम और काम दोनों से कन्नी काट ली है। इन सब चर्चाओं के बीच मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का चौथी सूची में विधानसभा उम्मीदवार के रूप में नाम घोषित होना भी इस बात का संकेत माना गया कि भाजपा आलाकमान यह मान चुका है कि शिवराज अब भाजपा के लिए अमृत नहीं रहे। अब वह परिस्थियां नही है कि उनके नाम से 2023 के विधानसभा चुनाव में विजय हासिल की जा सके।

क्या भाजपा नैतृत्व को कुछ बड़े नेताओं के नाम जिसमे शिवराज भी शामिल है। पहली सूची में शामिलकर इन नेताओं की गरिमा बढाने की कोशिश नही करना चाहिए थी। इसके विपरीत केंद्रीय नैतृत्व उन्हें हलाहल (विष) मानता दिखाई दे रहा है।

प्रदेश में नए चेहरे की तलाश में भाजपा

भाजपा द्वारा प्रदेश चुनाव में केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, प्रहलाद पटेल, फग्गनसिंह कुलस्ते एवं कैलाश विजयवर्गीय जैसे बड़े चेहरों को मैदान में उतारकर प्रदेश में नए नैतृत्व के उभार की संभावनाओं को बल दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों ने शिवराज की पांचवी शपथ पर संदेह व्यक्त करना शुरू कर दिया है। इन संदेहों को शिवराज सिंह के बयानों से भी बल मिला, जब आदिवासी बाहुल्य डिंडोरी जिले उन्होंने एक कार्यक्रम में भीड़ से कहा 'मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि मैं अच्छी सरकार चला रहा हूँ या बुरी। इस सरकार को आगे बढ़ना चाहिए या नहीं...? मामा को मुख्यमंत्री बनना चाहिए या नहीं...?' जनता से शिवराज के प्रश्न कहीं भाजपा आलाकमान को जवाब देने के लिए तो नहीं पूछे गए थे। इन सब कयासों के मध्य किसी भी प्रकार का पूर्वानुमान लगाना उचित नहीं होगा। शायद शिवराज के चेहरे पर चुनाव नहीं लड़ना भाजपा आलाकमान की एमपी को लेकर चुनावी रणनीति का हिस्सा हो सकता है। वर्तमान भाजपा अपने रणनीतिक निर्णयों को लेकर जानी जाती है। पांच राज्यो में चुनाव 2024 के लोकसभा चुनाव के पूर्व आयोजित हो रहे है। इन चुनावों को सेमीफाइनल के रूप में देखा जा रहा है। मध्यप्रदेश देश का बड़ा राज्य है। चुनाव पूर्व अनुमान भी भाजपा आलाकमान के लिए परेशानी का सबब माने जा रहे है। एमपी में मिली पराजय भाजपा को लोकसभा में भी नुकसान पहुचा सकती है। इस लिहाज से एमपी में भाजपा की रणनीति प्रधानमंत्री के चेहरे पर चुनाव लड़ने की दिखाई दे रही है। यह रणनीति 2018 विधानसभा में भाजपा को मिली पराजय के मद्देनजर भी आलाकमान द्वारा बनाई गयी प्रतीत होती है। भाजपा आलाकमान की इन सब रणनीतियों के मध्य यह कहने में कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि एमपी में चार दफा मुखिया का दायित्व सम्भाल चुके शिवराजसिंह अब भी प्रदेश में भाजपा के सबसे बड़े चेहरे है। लाडली बहनों के भाई है। आम जनता के मामा को दरकिनार करना भाजपा हाईकमान को कहीं भारी न पड़ जाए। ऐसे समय जब शिवराज प्रदेश में अपने बल पर किला लड़ा रहे थे। प्रदेश में शिवराज के खिलाफविरोध की लहर तो थी, किंतु शिवराज ही वह चेहरा है जिस पर प्रदेश की जनता का विश्वास है। आम आदमी सा लगने वाला शिवराज सिंह का चेहरा लाख विरोध के बावजूद भी प्रदेश की जनता की नजरों में बना हुआ है। मध्यप्रदेश में चुनाव पूर्व अनुमानों ने शायद आलाकमान को प्रदेश नैतृत्व को लेकर चुप्पी साधने पर मजबूर किया हो।

शिवराज की उपेक्षा का खामियाजा

आलाकमान ने शिवराज को चेहरा घोषित नहीं कर सरकार के खिलाफआ रहे चुनाव पूर्व अनुमानों को सच मानने की मान लिया है। भाजपा के केंद्रीय नैतृत्व की रणनीति के साथ भाजपा के कार्यकर्ता भी शिवराज को 2023 में एमपी के लिए उपयुक्त नही मानने की धारणा से ग्रसित हो गए है। शिवराज सिंह प्रदेश के एक मात्र लड़ाकू नेता है जो आमजनता के दिलो में राज करते हुए दिखाई दिए। अब जबकि भाजपा आलाकमान एमपी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ने की बात कर रहा है। एक प्रकार से शिवराज के प्रति केंद्रीय नैतृत्व का उपेक्षित रवैय्या भाजपा को नुकसान पहुचा सकता है। कुलमिलाकर भाजपा हाईकमान का मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज चौहान को चेहरा घोषित नहीं करना, शिवराज जैसे बड़े नेता को चौथी सूची में जगह देना, चुनाव पूर्व अनुमानों में एजेंसियों का शिवराज सिंह को कमजोर बताना, कमलनाथ का अपनी सरकार गिरने के बाद लगातार भावुक अपील करते रहना। यह बड़े कारण है जो पांचवी बार शपथ की विध्न एवं बाधाएं दिखाई पड़ रहे है। इसके बावजूद शिवराज पूरी शिद्दत के साथ प्रदेश की जनता से जनादेश मांगने के प्रयास में लगे हुए है। लोकतंत्र में जनता ही सबसे बड़ी ताकत होती है। प्रदेश की जनता अपने वोट की ताकत से किस राजनीतिक पार्टी की सरकार बनाएगी। यह तो परिणामो के आने पर ही पता लग पाएगा। फ़िलहाल तो यह सवाल बना हुआ है। शिवराज पांचवी बार प्रदेश में मुख्यमंत्री पद की शपथ ले पाएंगे या नही...? कर्नाटक में भाजपा की पराजय के बड़े कारणों में स्थानीय चेहरों को दरकिनार करना भी माना गया था। भाजपा को यह समझना होगा कि विधानसभा के चुनाव में प्रादेशिक चेहरे का होना बहुत जरूरी है। लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनाव दोनों में मतदाताओं की सोच अलग-अलग रहती है।लोकसभा चुनाव के मद्देनजर यह सच है की नरेंद्र मोदी अब भी प्रधानमंत्री पद हेतु जनता की पसंद बने हुए है। उसी प्रकार एमपी विधानसभा चुनाव में भाजपा की और से मुख्यमंत्री पद का सबसे बड़ा चेहरा शिवराज सिंह चौहान है। भाजपा आलाकमान को शिवराजसिंह के दरकिनार करने की कोशिशों का खामियाजा उठाना पड़ सकता हैं। मध्यप्रदेश भाजपा में शिवराज ही ऐसे नेता है जो सर्व स्वीकार और सर्व मान्य है। शिवराज जैसा दूसरा कोई नहीं है।

झाबुआ जिले में तीन साल से अधिक लंबे समय से पदस्थ अधिकारी और कर्मचारी की ट्रांसफर की जानकारी में सब गोलमाल ही गोलमाल

चुनाव आयोग ने अब सामान्य प्रशासन विभाग को लिखा जानकारी के लिए पत्र

माही की गूंज, भोपाल/झाबुआ

चुनाव से पहले जिले में तीन वर्ष अधिक समय से जमे अधिकारियो और स्थान्तरित किये गए कर्मचारियों की सूची आरटीआई कार्यकर्ता श्रवण मालवीय द्वारा मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी भोपाल से सूचना के अधिकार में विधानसभा चुनाव 2023 से संबंधित स्थानांतरण की जानकारी की मांग की थी। जिसको लेकर मुख्य चुनाव आयोग द्वारा जानकारी के लिए अलग-अलग पत्राचार किया गया। लेकिन जानकारी नही दी गई और जानकारी के लिए चुनाव आयोग एक-दूसरे को जिम्मेदार बताये हुए पत्र जारी कर रहे हैं। जिसका पूरा खुलासा गूंज ने अपने पिछले अंको में किया था। अब चुनाव आयोग ने नई जानकारी के नाम पर नया पेतत्रा लगाते हुए लोक सूचना अधिकारी, सामान्य प्रशासन विभाग, मंत्रालय भोपाल को जानकारी देने के लिए पत्र लिखना है। पुरे इस संवेदनशील मामले को गोलमाल करते हुए सीधे-सीधे इस मामले में चुनाव आयोग द्वारा जानकारी छुपाने या फिर चुनाव के पूर्व होने वाली प्रक्रिया को नही करना भी एक कारण हो सकता है। जिले में जमे अधिकारी इस बात का प्रमाण है। पूरे मध्यप्रदेश में इस प्रकार की लापरवाही की गई संभावित है। आरटीआई कार्यकर्ता श्रवण मालवीय ने इसके पीछे बड़ी सेटिंग ओर लेन-देन की आशंका व्यक्त कर जांच की मांग की है।

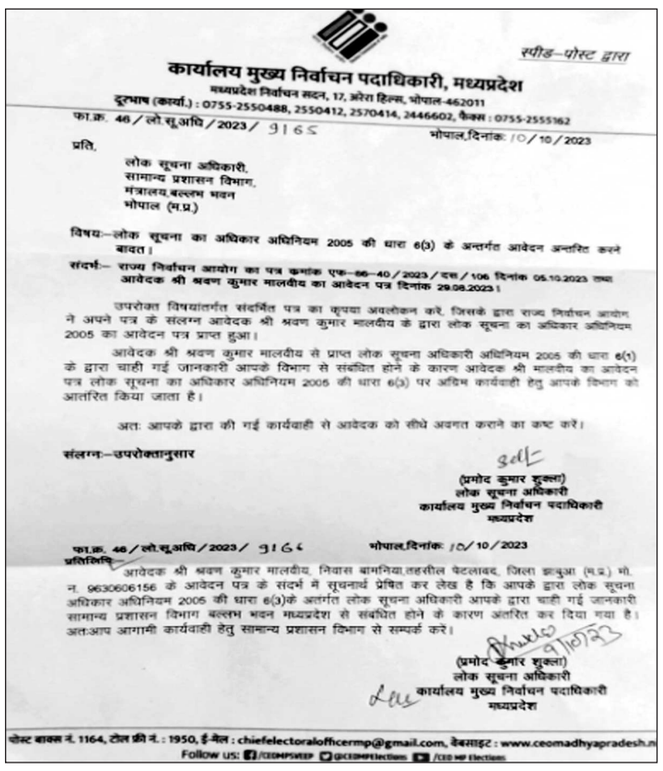

स्पीड–पोस्ट द्वारा

कार्यालय मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, मध्यप्रदेश
मध्यप्रदेश निर्वाचन सदन, 17, अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
दूरभाष (कार्या.) : 0755-2550488, 2550412, 2570414, 2446602, फैक्स : 0755-2555162

फा.क्र. 46/लो.सू.अधि/2023/ 9165 भोपाल, दिनांक: 10/10/2023

प्रति,
लोक सूचना अधिकारी,
सामान्य प्रशासन विभाग,
मंत्रालय, वल्लभ भवन
भोपाल (म.प्र.)

विषय:– लोक सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 6(3) के अन्तर्गत आवेदन अन्तरित करने बाबत।

संदर्भ:– राज्य निर्वाचन आयोग का पत्र क्रमांक एक-66-40/2023/दस/106 दिनांक 05.10.2023 तथा आवेदक श्री श्रवण कुमार मालवीय का आवेदन पत्र दिनांक 29.08.2023।

उपरोक्त विषयांतर्गत संदर्भित पत्र का कृपया अवलोकन करें, जिसके द्वारा राज्य निर्वाचन आयोग ने अपने पत्र के संलग्न आवेदक श्री श्रवण कुमार मालवीय के द्वारा लोक सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 का आवेदन पत्र प्राप्त हुआ।

आवेदक श्री श्रवण कुमार मालवीय से प्राप्त लोक सूचना अधिकारी अधिनियम 2005 की धारा 6(1) के द्वारा चाही गई जानकारी आपके विभाग से संबंधित होने के कारण आवेदक श्री मालवीय का आवेदन पत्र लोक सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 6(3) पर अग्रिम कार्यवाही हेतु आपके विभाग को आंतरित किया जाता है।

अतः आपके द्वारा की गई कार्यवाही से आवेदक को सीधे अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्न:–उपरोक्तानुसार

(प्रमोद कुमार शुक्ला)
लोक सूचना अधिकारी
कार्यालय मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी
मध्यप्रदेश

फा.क्र. 46/लो.सू.अधि/2023/ 9166 भोपाल, दिनांक: 10/10/2023
प्रतिलिपि–
आवेदक श्री श्रवण कुमार मालवीय, निवास बामनिया, तहसील पेटलावद, जिला झाबुआ (म.प्र.) मो. न. 9630606156 के आवेदन पत्र के संदर्भ में सूचनार्थ प्रेषित कर लेख है कि आपके द्वारा लोक सूचना अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 6(3) के अंतर्गत लोक सूचना अधिकारी आपके द्वारा चाही गई जानकारी सामान्य प्रशासन विभाग वल्लभ भवन मध्यप्रदेश से संबंधित होने के कारण अंतरित कर दिया गया है। अतः आप आगामी कार्यवाही हेतु सामान्य प्रशासन विभाग से सम्पर्क करें।

(प्रमोद कुमार शुक्ला)
लोक सूचना अधिकारी
कार्यालय मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी
मध्यप्रदेश

पोस्ट बाक्स नं. 1164, टोल फ्री नं. : 1950, ई-मेल : chiefelectoralofficermp@gmail.com, वेबसाइट : www.ceomadhyapradesh.n
Follow us: /CEOMPSVEEP /@CEOMPElections /CEO MP Elections

आखिर जानकारी क्यो नही दी जा रही...?

सूचना अधिकार में जो जानकारी मांगी गई वो आखिर क्यों नही दी जा रही है ये विचारणीय प्रश्न बनता जा रहा है। आरटीआई कार्यकर्ता श्रवण मालवीय ने बताया कि, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी भोपाल द्वारा दिनांक 10 अक्टूबर 2023 को एक बार फिर स्थानांतरण जानकारी को छुपाते हुए धारा 6(3) में सामान्य प्रशासन विभाग मध्य प्रदेश शासन भोपाल के लोक सूचना अधिकारी को नियम विरुद्ध मेरे पत्र की जानकारी नहीं देते हुए अंतरिम कर दिया गया है, जो मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी भोपाल घौर उल्लंघन को प्रदर्शित करता है। ऐसे में मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को चुनाव होना है और अधिकारियों के स्थानांतरण संबंधित आदेश को भी पदाधिकारी भोपाल द्वारा छुपाया जा रहा है। मालवीय ने कहा कि, समय अवधि में मेरा निराकरण नहीं होता है तो में उच्च न्यायालय खंडपीठ इंदौर में स्थानांतरण आदेश को छुपाए जाने एवं निष्पक्ष चुनाव सम्पन्न नहीं होने के मामले में जनहित याचिका दायर करूंगा।

6 जगह सजे गरबा पांडाल

माही की गूंज,पारा

गरबा महोत्सव के अवसर पर गांव व गांव से लगे 6 स्थान पर गरबा पांडाल सजे है। स्थानीय बस स्टैंण्ड पर सार्वजनिक गरबा मंडल, पिपली चौक, प्रजापति मोहल्ला, होली चौक, कैसरबाग चौराहा, बखतपुरा आदि स्थानों पर गरबा पांडाल सजे है। पांडाल में रात 9 बजे के बाद छोटे-बड़े, लड़के-लड़कियां सज-धज कर नया पहनावा पहनकर डांडिया रास खेलने आते हैं। गांव के सभी पांडाल गरबा नृत्य करने वाले माता के भक्तों से भर जाता हैं। इसके अलावा आसपास के क्षेत्र से भी गरबा देखने वाले सैकड़ो लोग आते है।

तहसीलदार निगवाल को टप्पा तहसील का अतिरिक्त प्रभार

माही की गूंज, सारंगी

पेटलावद तहसीलदार हुकुमसिंह निगवाल को जिला कलेक्टर तन्वी हुड्डा ने सारंगी टप्पा तहसील का अतिरिक्त प्रभार सोपा है। उल्लेखनीय है कि, सारंगी टप्पा तहसील की नायब तहसीलदार शालिनी श्रीवास्तव का 6 अक्टूबर को धार स्थांतरण हो जाने से सारंगी का काम काज प्रभावित हो रहा था। जिसके चलते एसडीएम अनिल कुमार राठौर की अनुशंसा पर कलेक्टर तन्वी हुड्डा ने आगामी आदेश तक सारंगी टप्पा तहसील का प्रभार तहसीलदार निगवाल को सोपने का आदेश जारी किया है। निगवाल अब पेटलावद सहित सारंगी का भी कामकाज देखेंगे।

चुनाव में 60 से अधिक उम्र और रिटायरमेंट के आसपास के कर्मचारियों की लगेगी ड्यूटी... ?

चुनाव की पहली ट्रेनिग में शामिल हुए कई कर्मचारी

माही की गूंज, पेटलावद

चुनाव प्रकिया को निपटाने के लिए जिला प्रशासन लगातार प्रसाशनिक स्तर पर बैठक और कर्मचारियों की ट्रेनिग कर रहा है। चुनाव में ड्यूटी को लेकर कई कर्मचारीयो में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। मेडिकल सहित विवाह आदि के लिए कई आवेदन जिला एवं विकास खण्ड के अधिकारीयो के पास पहुँच रहे हैं। जिनके आवेदन की पुष्टि के बाद ही कोई निर्णय लिया जाना है। ऐसे ही ट्रेनिग में कई ऐसे कार्मचारीयो को ट्रेनिग के लिये बुलाया गया है जिनकी आयु 60 से अधिक है और कुछ कार्मचारीयो का रिटायर्डमेन्ट तक दो माह से लेकर दस माह में होना है जिनकी ड्यूटी लगाने का प्रावधान नही है। प्रशासन को जानकारी देने वाले विभागीय बाबुओं द्वारा कर्मचारीयो की सूची उपलब्ध करवाने के दौरान इस बात का उल्लेख नही किया गया, जिससे प्रशासन को इसकी जानकारी उलपब्ध हो सके। चुनावी प्रक्रिया के दौरान गंभीर बीमार और वृद्ध कार्मचारीयो को मतदान दल में शामिल नही किया जाता है लेकिन ट्रेनिग में शामिल होने के बाद ऐसे कर्मचारियों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। क्योंकि जिला प्रशासन की और से इस सम्बंध में कोई आदेश-निर्देश जारी नही हुआ है। पेटलावद रिटर्निंग अधिकारी आईएएस अनिल कुमार राठौर से जानकारी लेने पर उन्होंने बताया कि, फिलहाल ट्रेनिग सब को दी जा रही है अगर सूची में ऐसे कार्मचारी होंगे तो उनकी सूची अलग से तैयार कर ली जाएगी।

ईनामी वारंटी गिरफ्तार, ग्राम में भी कर चुका है कई लोगों से धोखाधड़ी

माही की गूंज बामनिया, गौरव भंडारी

विधानसभा 2023 के परिपेक्ष्य में वर्तमान में आदर्श आचार संहिता लागू है। जिसमें अधिक से अधिक स्थाई/फरारी वारंटियों की तामिली हेतु पुलिस अधीक्षक झाबुआ द्वारा जिले के समस्त थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में थाना प्रभारी थांदला निरीक्षक राजकुमार कुंसा?रिया द्वारा वारंटियों की तलाश हेतु टीम को भेजा गया था। फरार स्थाई वारंटी रितेश पिता रमेशचन्द्र कटारा निवासी बामनिया हाल मुकाम ऋतुराज कालोनी थांदला जो कि, फौमुन 840/2017 धारा 294, 323, 50 भादवि में काफी समय से फरार था तथा उक्त वारंटी की गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक झाबुआ इनाम भी घोषित कर रखा था। फरार ईनामी स्थाई वारंटी के संबंध में मुखबीर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि, वारंटी गणेशपुरा इन्दौर में किराये के मकान में निवासरत् है, जिस पर वारंटी की गणेशपुरा इन्दौर में तलाश करते किराये के मकान में निवासरत् होना पाया गया। जिसे गिरफ्तार किया जाकर थाना थांदला लाया गया। वारंटी को न्यायालय में पेश किया गया जहाँ से उसे जेल भेज दिया गया।

पुलिस गिरफ्त में फरार वारंटी धोखेबाज रितेश कटारा।

ग्राम में भी कर चुका है कई लोगो से धोखाधड़ी

वारंटी रितेश कटारा वही है जिसने थांदला मैं लोगो के साथ धोखाधड़ी की फिर बामनिया में रहकर यहाँ के लोगो को शिकार बनाया। रितेश के पिता रमेशचंद्र कटारा एक सम्मानीय शिक्षक थे उनकी छवि भी धूमिल करने मैं कोई कसर नहीं छोड़ी। रितेश ने बामनिया में बैंक का कियोस्क सेंटर के माध्यम से गरीब लोगो के खातों में हेराफेरी की, एक महिला ने इसकी शिकायत बामनिया चौकी पर भी की थी। चालाक रितेश ने अपनी चिकनी चुपड़ी बातो मैं लोगो को फसाकर कई लोगो से उधार पैसे व प्राइवेट बैंक से लोन ले रखे है अब जिन लोगो ने धोकेबाज रितेश पे भरोसा करके जमानत के लिए साइन किये उनको प्राइवेट बैंक वाले डरा धमका रहे है। जमानतदार खुद की जेब से पैसा भर धोकेबाज रितेश का लोन चुकाने को मजबूर हो रहे क्यों की रितेश गाँव छोड़ कर भाग गया। खवासा के एक व्यापरी से भी रितेश ने उधार रूपये लेकर ग्यारंटी के तोर पे चेक लिया था तय समय पर रूपये नहीं लोटाने पर व्यापरी ने बैंक मैं चेक लगा दिया जो की बाउंस हो गया वो कैस भी व्यापरी द्वारा थांदला कोर्ट मैं लगाया गया। कई लोगो के साथ धोखाधड़ी करने वाले रितेश ने अपने परिवार को भी कलंकित किया है।

मां के भक्तों पर चढ़ने लगा है गरबो का रंग, पंडालों में सुनाई देने लगी है डांडिया की खनक

माही की गूंज, सारंगी

शारदीय नवरात्र की शुरुआत रविवार से हो गई माता की घट स्थापना के साथ ही नवरात्रि पर्व शुरू हो गया है। ग्राम व आसपास के ग्रामीण अंचलों में भी माता की आकर्षक प्रतिमाओं की घट स्थापना की गई। नौ दिनों तक ग्राम सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी नवरात्रि उत्सव की धूम मची हुई है। ग्राम के भैरवनाथ बस स्टैंड, बस स्टैंड माताजी मंदिर, गायत्री माता मंदिर को भी आकर्षक विद्युत साज-सजा कर सजाया गया है। शाम के वक्त मंदिरों में माता-बहने, बच्चे बड़ी संख्या में मंदिरों में पहुंच रहे हैं। हर कोई मां की भक्ति मां की आराधना में लगा हुआ है। भैरवनाथ बस स्टैंड पर माता जी की आकर्षक मूर्ति स्थापना की गई है साथ ही पूरे पंडाल में सुंदर लाइटों से साज सज्जा की गई है। आरती के पश्चात यहां पर बालक एवं बालिकाओं द्वारा आकर्षक गरबा नृत्य की प्रस्तुति दी जा रही है।

हवा व पानी के साथ जमा गरबे का रंग

माही की गूंज, काकनवानी

नवरात्रि गरबा महोत्सव की शुरुआत होते ही पहले ही दिन तेज हवा और बारिश ने परेशानियां बढ़ा दी थी, जिसके चलते काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। लेकिन शाम होते-होते पंडाल फिर से रोशनी में जगमगाने लगा और मां की आराधना के लिए भक्तों का धीरे-धीरे जमावड़ा होने लगा। बच्चे, बूढ़े, नौजवान, बालक-बालिकाएं अपने-आप में टोलिया बनाकर रास गरबे व माताजी की आराधना कर रहे हैं। आचार संहिता के चलते समय पर गरबे बंद कर दिए जाते हैं।

आस्था और विश्वास का सैलाब उमड़ा, तीसरे दिन भक्ति रस में डूबा पंखिड़ा गरबा

माही की गूंज, पेटलावद

15 अक्टूबर से शुरू हुए महापर्व नवरात्रि महोत्सव मे पेटलावद स्थित सुंदर गार्डन पर अयोजित पंखिड़ा गरबा महोत्सव अपनें सफलतम तीसरे वर्ष में प्रवेश कर गया है। पूर्व वर्षो में लोकप्रियता हासिल किए पुरे अंचल में अपनी अलग पहचान बनाई है। पहले ही दिन अनुपम सुरेंद्र भण्डारी परिवार ने महाआरती, प्रसादी का लाभ लिया। वहीं विशेष अतिथि के रूप में पत्रकार साथी उपस्थित रहे। वही दूसरे दिन समिति ने आरती प्रसादी का लाभ लिया। तीसरे दिन महोत्सव अपनें चरम पर पहुंच गया और भक्तो की भारी भीड़ जुट गई। गरबा नृत्य करने वालो के लिए पांडाल छोटा लगने लगा। तीसरे दिन की महाआरती प्रसादी का लाभ योगेश गामड़ मित्र मंडल ने लिया, वहीं विशेष अतिथि के रूप में लायन्स क्लब (मेंस) उपस्थित रहा।

किसी भी कार्यक्रम की लोकप्रियता उसकी सुरक्षा होती हे और उक्त आयोजन में छोटी लड़कियों से लेकर महिलाएं तक नो दिवसीय मां के उत्सव में आराधना में लीन रहते हुए गरबा खेलते है। उसी सुरक्षा के चलते समिति द्वारा उक्त पूरा परिसर सीसीटीवी कैमरे से युक्त है जो अपनी पेनी निगाह से शरारती तत्वों पर निगाह बना कर रखता है। इसी सुरक्षा के चलते यह पूरा परिसर माता-बहिनों के लिए पूरी तरह सुरक्षित हे।

पीडब्लयुडी की जगह पर फिर हुआ अतिक्रमण

माही की गूंज, पारा

स्थानीय बस स्टैंड के नीचे फिर अतिक्रमण कर्ता ने लोग निर्माण विभाग की जगह पर अतिक्रमण कर बड़ी घूमती लगाई। इसी स्थान पर पूर्व में भी पंचायत ने अतिक्रमण कर पक्की दुकानों का निर्माण कर किराये से दे दी थी लेकिन बाद में अनुविभागीय अधिकारी ने सड़क के आसपास वाली दुकानों को चिन्हित कर अतिक्रमण हटाया था। अतिक्रमण मुहिम के तहत अधिकारी ने आधा अतिक्रमण हटाया था बाकी मुहिम हवा में फुर हो गई थी। उसके कुछ ही दिनों बाद ही लोगों ने पुनः अतिक्रमण कर फिर घुमटिया लगा दी। अभी दो-चार दिन पहले फिर कोई अज्ञात व्यक्ति ने 10 बाय 10 की गुमटी ला कर लगा दी।

कुंभकरण की नींद सोया विभाग

लोक निर्माण विभाग में भरपूर लापरवाही का आलम यह है कि विभाग ने पारा की सड़के एक भ्रतीय के भरोसे छोड़ रखी है। जिले में बैठे आला अफसर कभी सड़कों का जायजा भी लेते हैं या नहीं। अभी बारिश के पूर्व गड्ढे वाली सड़क का डामरीकरण पेजवर्क करवाया था। बारिश के बाद दोबारा सड़क बड़े-बड़े गड्ढों में तबदील हो गई। विभाग यह अच्छी तरह से जानता है कि, सड़क निर्माण के बाद आसपास बारिश के पानी निकालने हेतु नालियों का निर्माण करवाया जाता है ताकि बारिश का पानी बाहर निकल सके। मगर ऐसा ना होते हुए भी सड़क का पेचवर्क करवाया गया। अभी बारिश के दिनों में बारिश के पानी की निकासी के अभाव में सड़क तालाब में तब्दील हो जाती थी, इससे ऐसा प्रतीत होता है की लोक निर्माण विभाग कुंभकरण की नींद में सोया है।

रोग्या देवी प्रागण में गरबा नृत्य।

गरबों की धुन पर जमकर हो रहा नृत्य

माही की गूंज, खवासा।

संकट मोचन प्रागण में गरबा नृत्य।

हर पर्व का अपना एक महत्व होता है जिसमें नवदुर्गा महोत्सव का रंग ऐसा होता है कि हर कोई गरबा नृत्य करने के लिए उतारू हो जाते हैं। खवासा में बाजना मार्ग स्थित रोग्या देवी मंदिर पर जब कोई आधुनिक व्यवस्था नहीं थी उस समय से नव दिन अखंड दीपक जलाकर ,पांच गरबा गाकर गरबा महोत्सव की शुरुआत की गई थी। आज के दौर में पूरे आधुनिकता के साथ वाद्य यंत्र के साथ आकर्षक विद्युत सजावट के साथ रोग्या देवी गरबा महोत्सव समिति द्वारा आकर्षक गरबा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें छोटी बालक-बालिकाओं से लेकर महिला, युवा वर्ग आकर्षक पहनावे के साथ जमकर गरबा रास व नृत्य कर शारदीय नवरात्रि गरबा महोत्सव का आनंद ले रहे हैं। समिति के अध्यक्ष विमल चौहान ने बताया, सभी धर्म व वर्ग के व्यक्ति सामूहिक रूप से सहयोग प्रदान कर उक्त गरबा महोत्सव को भव्य रूप दे रहे है। वहीं पिछले करीब 12 वर्षो से बजरंगबली मंदिर लोहार गली में संकट मोचन गरबा महोत्सव समिति द्वारा भव्य रूप से गरबा का आयोजन किया जा रहा है। समिति के अध्यक्ष मनीष चौहान ने बताया कि, समिति पिछले 12-13 वर्षो से यहां गरबा महोत्सव का आयोजन कर रही है और गरबा महोत्सव को भव्यता देने हेतु छोटा हो या बड़ा सभी एक स्वरूप तन-मन व धन से सहयोग करते हैं।18:- संकट मोचन प्रागण में गरबा नृत्य।

संपादकीय

निठारी का निराश करने वाला न्यायिक फैसला

जब नोएडा के निठारी गांव में बच्चियों व महिलाओं की क्रूरता से की गई सिलसिलेवार हत्याओं का मामला उजागर हुआ तो पूरा देश स्तब्ध था। इन हत्याओं की जो भयावह दास्तां मीडिया में तैरती रही, उसने हर संवेदनशील इंसान को झकझोरा था। बाद में सीबीआई अदालत ने साक्ष्यों के आधार पर नौकर सुरेंद्र कोली और उसके नियोक्ता मोनिंदर सिंह पंधेर को मौत की सजा सुनाई थी। देश मानकर चल रहा था कि, इलाहाबाद हाईकोर्ट में चल रहे मुकदमे के फैसले में भी यह कड़ी सजा बरकरार रहेगी। इस भयावह कांड में सोमवार को आए फैसले ने एक बार फिर देश को स्तब्ध किया। अदालत ने अकाट्य सबूतों के अभाव में उन दोनों अभियुक्तों को बरी कर दिया, जिन्हें निचली अदालत ने मौत की सजा सुनाई थी। जाहिर है इस फैसले से देश में निराशा पैदा हुई है। जांच एजेंसी तथा न्याय व्यवस्था की सार्थकता पर सवाल उठे हैं। लेकिन असली सवाल ये है कि, आज से सत्रह वर्ष पहले वीभत्स कांड के उजागर होने के बाद बरामद उन्नीस बच्चियों व महिलाओं के कंकालों का अपराधी कौन है...? जब ये भयावह मामला उजागर हुआ था तो मृतकों के कपड़े व चप्पल आदि आरोपियों के यहां से बरामद होने की बात सामने आई थी। समझा जा रहा था कि, इतने साक्ष्यों के बाद अभियोजन पक्ष ने मजबूत सबूतों के आधार पर अपराधियों को दंड दिलाने की पुख्ता व्यवस्था की होगी। लेकिन विडंबना देखिए कि, ये साक्ष्य अदालत की कार्रवाई में टिक नहीं पाये। सवाल सीबीआई की नाकामी के भी उठे हैं। ऐसे ही सवाल आरुषि तलवार दोहरे हत्याकांड में भी उठे थे। बहरहाल, डेढ़ दशक से अधिक समय के बाद निठारी कांड ने फिर देश को सन्न किया है। लोग पूछ रहे हैं यदि ये आरोपी निर्दोष हैं तो फिर एक नाले से बरामद कंकाल किस अपराधी का कृत्य था। दरअसल, हाईकोर्ट का मानना है कि अभियोजन पक्ष संदेह से परे अपराध साबित करने में विफल रहा है। फिर सवाल यह है कि गाजियाबाद की सीबीआई अदालत ने किस आधार पर अपराधियों को हत्या, बलात्कार, अपहरण व साक्ष्य मिटाने के आरोप में दोषी माना। जाहिर है, पीड़ित परिवारों के लोग अदालत के फैसले के बाद सदमे में हैं। दरअसल, अपराधियों का शिकार बनी बच्चियां व महिलाएं गरीब परिवारों से थीं। जिनमें अधिकांश पश्चिम बंगाल व बिहार आदि राज्यों से आए श्रमिक थे। इस फैसले के बाद फिर उस धारणा को बल मिला है कि देश में गरीबों को न्याय मिलना मुश्किल हो गया है। निश्चित तौर पर अभियोजन पक्ष ने मामले में संवेदनहीनता दर्शाई है। जब यह मामला उजागर हुआ था तब भी उत्तर प्रदेश सरकार के एक कैबिनेट मंत्री ने इन भयावह हत्याओं को छोटी-मोटी घटना बताया था। वहीं दूसरी ओर पुलिस ने गरीब श्रमिकों के बच्चे लापता होने के मामले को पहले गंभीरता से नहीं लिया था। वहीं तब भी पंधेर व कुछ पुलिसकर्मियों की मिलीभगत के आरोप लगे थे, जिसकी जांच होनी बाकी है। निःसंदेह, जघन्य हत्याकांडों के आरोपियों का अदालत में बरी होना जांचकर्ताओं पर भी उंगली उठाता है। जो हमें बताता है कि कैसे भयावह सच्चाई भी घटिया जांच का शिकार बन जाती है। कहना कठिन है कि, यह परिणाम सीबीआई की उदासीनता का नतीजा है या न्यायिक व्यवस्था के छिद्रों का लाभ अभियुक्तों ने उठाया है। जिसके चलते न केवल आरोपियों की फांसी की सजा खत्म हुई बल्कि अभियुक्त बरी भी हो गये। इसके बाद पीड़ित परिवारों की नाराजगी सामने आना स्वाभाविक ही है। ये फैसला सीबीआई के लिए भी सबक है कि दलीलों व सुबूतों में संदेह की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। यह भी कि देश में यह संदेश न जाए कि गरीब अन्याय झेलने को अभिशप्त हैं। जैसा कि कहा जा रहा है कि, सीबीआई इस मामले को शीर्ष अदालत में चुनौती देगी, तो उम्मीद की जानी चाहिए कि सीबीआई अकाट्य सबूतों के साथ आगे बढ़ेगी। ताकि देश में सीबीआई की नाकामी का संदेश न जाए। इस संभावना पर भी विचार करने की जरूरत है कि, क्या इस जघन्य हत्याकांड की नए सिरे से जांच संभव है...?

जनतंत्र को मजबूत भी बनायें ये चुनाव

-विश्वनाथ सचदेव

यूं तो पिछले एक अर्से से हमारा देश 'चुनावी मोड' में ही चल रहा है, पर अब तो आम चुनाव से पहले के सेमीफाइनल की बाकायदा घोषणा भी हो गयी है। शंखनाद हो चुका है। दिसंबर तक पांच राज्यों में नयी सरकारें भी बन ही जाएंगी। सवाल यह नहीं है कि कौन जीतेगा या कौन हारेगा, सवाल यह है कि इन चुनाव के बाद हमारा जनतंत्र कुछ मज़बूत होगा या कमजोर?

हम जनतंत्र का अमृत महोत्सव मना चुके हैं। अब हमारा अमृत-काल चल रहा है। क्या मतलब होता है इस अमृत-काल का, यह तो वही जाने जिन्होंने यह जुमला उछाला है, पर यह तय है कि जुमलेबाजी हमारी राजनीति का एक महत्वपूर्ण हथियार बन गयी है। पिछले आठ-दस सालों में हमने इस हथियार की धार भी देख ली है। होना तो यह चाहिए था कि अपना 'अमृत-महोत्सव' मनाने वाला हमारा लोकतंत्र लोकतांत्रिक मूल्यों और मर्यादाओं को मज़बूती देते हुए दिखता, पर चुनावी बिसात पर सजे मोहरे बता रहे हैं कि सारा ज़ोर येन-केन-प्रकारेण मुकाबला जीतने का है। हम देख रहे हैं, और यह स्पष्ट कहा भी जा रहा है कि मैदान में उन्हीं उम्मीदवारों को उतारा जा रहा है, जिनके जीतने की उम्मीद सबसे ज़्यादा है। यहां तक तो बात फिर भी ठीक लगती है, पर उम्मीद पूरी करने के अराजक तौर-तरीकों का स्वीकार लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए खतरे की घंटी ही माना जाना चाहिए। यह घंटी बज रही है, ज़ोरों से बज रही है, पर क्या हम इसे सुन रहे हैं? सच बात तो यह है कि हम शायद इसे सुनना भी नहीं चाहते। जनता के शासन का नाम है जनतंत्र। जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन। चुनावों का होना या फिर वोट देना मात्र ही इस बात का प्रमाण नहीं है कि हमारा जनतंत्र फल-फूल रहा है। वोट मांगने वाले और वोट देने वाले, दोनों, का दायित्व बनता है कि वह जनतंत्र की इस पूरी प्रक्रिया में ईमानदारी से हिस्सा लें। आज हमें स्वयं से यह पूछने की आवश्यकता है कि क्या हमारी राजनीति में ईमानदारी नाम की कोई चीज बची है? झूठे वादे करना, धर्म और जाति के नाम पर मतदाताओं को बरगलाना, आधारहीन आरोपों के शोर में विवेक की आवाज़ को दबा देना, यह सब तो जनतंत्र नहीं है।

दुर्भाग्य यह भी है कि जनतांत्रिक मूल्यों के नकार के इस खेल में कोई पीछे रहना नहीं चाहता। सब अपने-अपने महिमा-मंडन में लगे हैं। आत्म-प्रशंसा से लेकर पर- निंदा तक फैला हुआ है हमारा बदरंग इंद्रधनुष। होना तो यह चाहिए कि राजनीतिक दल अपनी-अपनी रीति-नीति का ब्योरा लेकर जनता के पास जाएं, पर हमारी समूची राजनीति 'पहले की सरकारों' को कोसने से लेकर अपना ढोल बजाने तक सीमित होकर रह गयी है। जो अपने आप को जितना बड़ा नेता समझता-कहता है, वह उतने ही ज़ोर से विरोधी पर लांछन लगाने में लगा है। अपेक्षित तो यह है कि सत्ता-पक्ष चुनाव के मौके पर अपनी उपलब्धियों का लेखा-जोखा मतदाता के समक्ष प्रस्तुत करे और विपक्ष सत्ता-पक्ष की कमज़ोरियों और अपनी रीति-नीति के बारे में बताए। बताए कि वह कैसे और क्या बेहतर करेगा। लेकिन ऐसा कुछ होता दिख नहीं रहा। चुनाव के संदर्भ में जो हो रहा है वह एक तो यह है कि विरोधी को नीचा दिखाने की कोशिश और दूसरे रेवड़ियां बांटने की प्रतिस्पर्धा। बड़ी बेशर्मी से मतदाता को लुभाने की होड़-सी लगी है।

एक और प्रवृत्ति जो पिछले एक अर्से से हमारी राजनीति में पनपी है वह मतदाता को अपमानित करने वाली है। हमारे राजनेताओं ने मान लिया है कि देश का मतदाता कुछ रुपयों से खरीदा जा सकता है। दो तरीकों से मतदाता को रुपये बांटे जा रहे हैंदृएक तो यह कि चुनाव के मौके पर नोट के बदले वोट दिया जाये और दूसरे वैध तरीके से कभी बेटियों के नाम पर, कभी माताओं-बहनों को नगद राशि दी जाये। स्कूलों में बच्चों की फीस माफहो, गैस-बिजली आदि की दरें कम की जाएं, सस्ती दरों पर जरूरतमंदों को अनाज बांटा जाये, यह तो फिर भी समझ में आता है, पर यह समझना मुश्किल है कि लाभार्थियों के खातों में पैसे जमा करना रिश्वत नहीं तो और क्या है? रिश्वत लेना या देना अपराध है पर यह अपराध हमारे राजनीतिक दल खुलेआम कर रहे हैं। न उन्हें कोई सज़ा मिलती है और न उन्हें कोई डर है इसका। था एक ज़माना जब मतदान की यज्ञ से तुलना की जाती थी और वोट को तुलसी-दल की पवित्रता प्राप्त थी। अब तो यह चुनाव ऐसी लड़ाई बन गया है जिसमें सब कुछ जायज मान लिया गया है। यहां तक कि विरोधी को अपशब्द कहते हुए भी किसी को कोई शर्म नहीं आती। बहुत पुरानी बात नहीं है जब संसद तक में ऐसे शब्द काम में लिये गये थे, जो किसी भी सभ्य समाज में उचित नहीं माने जा सकते। इसमें संदेह नहीं कि चुनाव जीतने के लिए ही लड़े जाते हैं, पर किसी भी कीमत पर जीत हमारे जनतंत्र को खोखला ही बनायेगी। संप्रदायवादी ध्रुवीकरण और अवसरवादी राजनीति के सहारे खड़ा किया गया सत्ता का महल भीतर से खोखला ही होता है, यह बात हमारे राजनीतिक दलों को समझनी ही चाहिए। हमारे राजनेताओं को भी यह सीखना होगा कि इस तरह की अनैतिक राजनीति उन्हें तात्कालिक सफलता भले ही दे दे, पर इस राजनीति का ज़हर हमारे जनतंत्र को असाध्य बीमारी का शिकार बना देगा। इस बीमारी से देश को बचाना हमारे अस्तित्व की शर्त है, जनतंत्र के बने रहने की शर्त है।

अभी पांच राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, फिर लोकसभा के लिए चुनाव होंगे। चुनाव के इस माहौल में यह बात समझना ज़रूरी है कि चुनाव जीत कर सरकार बनाने में सफलता ही जनतंत्र की सार्थकता नहीं है। यह सार्थकता तभी उजागर होगी जब मतदाता के पास चुनने का अधिकार ही नहीं, अवसर भी होगा। सांपनाथ और नागनाथ में से चुनने की विवशता कुल मिलाकर जनतंत्र का नकार ही है। इसका सीधा-सा मतलब यह है कि एक तरह की राजनीतिक बेईमानी का शिकार हो रही है हमारे देश की जनता। इस स्थिति से उबरने का रास्ता भी हमारे बड़बोले राजनेता अथवा घटिया राजनीति नहीं खोजेगी। मतदाता को स्वयं खोजना होगा यह रास्ता। अपने विवेकपूर्ण निर्णय से ही देश का मतदाता उस लक्ष्य तक पहुंचा सकता है जो किसी भी सुव्यवस्था के लिए अपेक्षित है। आने वाले कुछ दिन राजनीति का घटिया खेल खेलने वाले राजनेताओं द्वारा मतदाता को बरगलाने की कोशिश का अवसर हैं। लच्छेदार भाषा में अपना ढोल पीटने वाले राजनीति के ठेकेदारों को यह समझाने का अवसर भी यही है कि कुछ समय के लिये कुछ लोगों को भले ही मूर्ख बनाया जा सके, पर हमेशा सबको मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। यह बात मतदाता और राजनेताओं, दोनों, को समझनी है। यह समझ जितनी जल्दी आ जाये, जनतंत्र के स्वास्थ्य के लिए उतना ही बेहतर है।

बेटियों को दें सम्मान से जीने का हक

-नरेश कौशल

देश इस वक्त नवरात्र की पावन वेला में तन-मन से साधनारत है, आराधना देवी की, जो शक्ति की प्रतीक हैं। उनके दृश्य-प्रतीक नारी की शक्ति और क्षमताओं को दर्शाते हैं। बहुत संभव है हमारे पूर्वजों ने इस पर्व की शुरुआत समाज में नारी की गरिमा व सम्मान को व्यवहार में लाने के लिये की। मसलन, यह बताने की कोशिश कि किसी समाज की सभ्यता के तौर पर पहचान तभी तक है जब तक उस समाज में नारी को पूरा सम्मान मिलता है। स्त्री को न केवल समानता का दर्जा व्यावहारिक जीवन में देना जरूरी है बल्कि उसकी अस्मिता की रक्षा भी सुनिश्चित करना है। उसका जीवन किसी भी तरह के भेदभाव से मुक्त रखना होगा। हमारे समाज ने शेर पर विराजमान देवी को नारी शक्ति के प्रतीक के रूप में पूजा है। जो इंगित करता है कि वह वक्त पड़ने पर हिंसक शेर को भी वश में करना जानती है। उसके अस्त्र-शस्त्र उसकी क्षमताओं के पर्याय हैं, यह बताने के लिये कि वह अपने साथ होने वाले अन्याय का जवाब देने में सक्षम है। संदेश यह कि वह कमजोर नहीं है। साल में दो बार आने वाले शारदीय व वासंतिक नवरात्र हमें नारी शक्ति, अस्मिता व गरिमा का अहसास कराने के लिये हैं। लेकिन विडंबना है कि हमने इन प्रतीकों व संकेतों को महज कर्मकांड में तब्दील कर दिया है। हाल के दिनों में हम रोज अखबारों पर नजर डालें तो आये दिन महिलाएं अपराधियों की क्रूरता का शिकार होती नजर आती हैं। ऐसा लगता है कि देश में यौन हिंसा का विस्फोट हो रहा है। कष्टदायक है कि मोबाइल पर इंटरनेट की पहुंच के बाद उसमें अश्लील सामग्री का सैलाब-सा नजर आ रहा है। ये पाश्चात्य खुलापन व अश्लीलता न हमारे संस्कारों में है और न ही हमारे वातावरण व जलवायु इसके अनुकूल हैं। देश में कई बड़े यौन अपराधों में यह डराने वाला सच सामने आया है कि अपराधियों ने मोबाइल पर अश्लील सामग्री देखने के बाद यौन अपराधों को अंजाम दिया। ऐसे वक्त में, जब हमारे शिक्षा संस्थान गुरुकुलों की तरह छात्रों के बहुमुखी विकास और ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाने में पिछड़ रहे हैं, तो ऐसे में माता-पिता को यह जिम्मेदारी निभानी होगी कि युवा इस भटकाव से बचें। कष्टदायक यह है कि यौन कुंठाओं के विस्फोट में असहाय महिलाएं व बच्चियां हिंसा का शिकार बन रही हैं। हाल ही में बरेली की वह घटना परेशान करती है जिसमें प्रेम निवेदन अस्वीकार करने पर एक लड़की को एक बिगड़ैल लड़के ने चलती ट्रेन के आगे धकेल दिया, जिसमें उसके हाथ-पैर कट गये। भारतीय संस्कृति पश्चिमी जीवनदर्शन की तर्ज पर महिला को भोग्य नहीं मानती। महिला हमारी संस्कृति सभ्यता में ऊंचा स्थान रखती है। दरअसल, नवरात्र का यह पर्व कन्याओं के पूजन तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। युवाओं में भी ऐसे संस्कार पनपने चाहिए कि समाज में बेटियों का सम्मान केवल नवरात्र में ही नहीं, सालभर करना है। जिस दौर में यौन कुंठाएं लगातार अपराध की वजह बन रही हों, वहां इसके खिलाफ देशभर में मुहिम चलाने की जरूरत है। इसमें परिजनों, शिक्षकों व समाजसेवी संस्थाओं को रचनात्मक पहल करनी होगी। सही मायनों में देश में लैंगिक भेदभाव दूर करने का सबसे बड़ा कदम हमारे घरों से उठाया जाना चाहिए। हमें बेटियों को न केवल सक्षम व सबल बनाना है बल्कि उन्हें किसी भी तरह के लैंगिक भेदभाव से आजाद भी करना है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि हम समाज में बेटियों को उनका असली हक नहीं दे पाये हैं। अभी ज्यादा दिन नहीं हुए जब संसद व विधानसभाओं में महिलाओं को तैंतीस फीसदी आरक्षण देने का कानून पास किया गया। कहना कठिन है कि इसे हकीकत बनाने में किंतु-परंतुओं से कितने समय बाद छुटकारा मिलेगा। अभी तो जनगणना व परिसीमन का पेच बाकी है। फिर भी इसे अच्छी शुरुआत तो कह ही सकते हैं। मगर ध्यान रहे कि यह आधी दुनिया का न पूरा हक है, न ही पूरा सच। यह सिर्फतैंतीस फीसदी हक ही है। कोशिश यह भी होनी चाहिए कि महिलाओं को काम के बदले पुरुषों के बराबर मेहनताना मिले। वैश्विक सर्वेक्षण बता रहे हैं कि दुनिया में महिलाओं को पुरुषों के बराबर हक हासिल होने में अभी सौ साल से अधिक समय लगेगा। फिर भी, इस तरफ ईमानदारी से कोशिश तो होनी ही चाहिए। हुक्मरानों से पूछा जाना चाहिए कि देश के कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी 37 फीसदी ही क्यों है? महिला-पुरुष आय में समानता के मुद्दे पर हमारी पहचान दुनिया में 141वें स्थान पर क्यों है? लिंगानुपात में हम दुनिया में 140वें स्थान पर क्यों हैं? महिलाओं में कुपोषण व स्वास्थ्य के मामले में हम 137वें स्थान पर क्यों हैं? आज उद्योगों में महिला नेतृत्व के मामले में हम इतने पीछे क्यों हैं? दरअसल, हम नारी को पूजने की बात तो करते हैं, मगर समाज में उसे बराबरी का हक देने में पीछे रह जाते हैं। वास्तव में उसके सपनों को हकीकत में बदलने की जरूरत है। पिछले दिनों ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक का एक चित्र मीडिया में शोभा बढ़ाता नजर आया, जिसमें मुख्यमंत्री स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को स्कूटर प्रदान कर रहे थे। इसमें दो राय नहीं कि इस तरह के प्रयोग महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये बेहद उपयोगी हैं। पूरे देश के राजनेताओं को इस मुहिम से सबक लेना चाहिए। चुनाव में रेवड़ियां बांटने के बजाय ऐसे ही महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को मदद की जरूरत है। एक तो वे स्वावलंबी बनेंगी, अन्य महिलाओं को प्रेरित करेंगी, दूसरे देश के आर्थिक विकास में सहयोग करेंगी। लिज्जत पापड़ जैसे अभियानों की सफलताओं के उदाहरण हमारे सामने हैं। महिलाएं ईमानदारी व पारदर्शिता के साथ छोटे उद्योगों को तो समृद्ध करती ही हैं, साथ ही लुघ उद्योगों की एक नई शृंखला को भी जन्म देती हैं। उनकी आय बढ़ने से जहां उनकी परिवार में आवाज बुलंद होगी, वहीं वे अपने व परिवार के स्वास्थ्य को भी सुधार पाएंगी। आज देश की बेटियां खेल के मैदान से लेकर युद्धक विमान उड़ाने तक का काम कर रही हैं। सेना के तीनों अंगों में उनकी सबल भागीदारी होने लगी है। पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों में उनकी कारगुजारी पहले से ही खास रही है। यह बताता है कि वे शक्ति के मामले में किसी से कम नहीं हैं। जरूरत इस बात की है कि उनके सपनों की उड़ान को ऊर्जा दी जाए। उन्हें प्रोत्साहन दिया जाये। उन्हें न्याय मिले, बराबरी के अधिकार मिलें। तभी हमारा कन्या पूजन सही मायनों में सार्थक होगा।

जीत के नुस्खों का चुनावी मनोरंजन

-क्षमा शर्मा

पांच विधानसभाओं यथा- राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, मिजोरम के चुनाव आ पहुंचे हैं। जल्दी ही 2024 में लोकसभा के चुनाव होने वाले हैं। हमारे यहां चुनाव बहुत से पश्चिमी देशों से अलग होते हैं। स्विट ?ज़रलैंड में तो चुनाव में वोट हाथ खड़े करके ही डाल दिए जाते हैं। वहां न मतपत्रों का लफड़ा है न ईवीएम का। इसलिए अक्सर चुनावों में हुई बेईमानी का रोना भी नहीं रोता है।

जब से टीवी की क्रांति हुई है, चैनल्स चौबीस सात के हिसाब से काम करने लगे हैं, सोशल मीडिया आ पहुंचा है, और अखबारों की उपस्थिति घरों में बहुत बढ़ी है तब से चुनाव बहुत ही रोचक मोड में आ गए हैं। यह एक ऐसी लम्बी सुपरहिट फिल्म है जो महीनों तक चलती है। हर रोज एक नया नायक और नायिकाएं जन्म लेती हैं। दिलचस्प है कि अभी मंच पर जिसे नायक बनाया गया है, मीडिया में जिसकी खूब बाइट्स चली हैं, वह अगले ही पल खलनायक में तब्दील कर दिया जाता है। हिंदी फिल्मों का बड़े से बड़ा स्क्रिप्ट राइटर वह मनोरंजन पैदा नहीं कर सकता जो चुनाव करते हैं। और इसे आप बिना कहीं आए जाए, बिना समय बर्बाद किए, बिना टिकट खरीदे, हर वक्त देख सकते हैं। इसमें बाक्स आफिस की चिंता भी नहीं करनी पड़ती। हां हार-जीत का, नफे-नुकसान का पता जरूर चलता रहता है। भांति-भांति के चरित्र दिखाई देते हैं। अभी किसी ने मंच से भाषण में अपने शब्दों से किसी को दो लप्पड़ लगाए। फिर अगली जगह कोई दूसरा बोलने आया तो उसने खींचकर पांच लात मारी। आज किसी ने की ऐसा वक्तव्य दिया कि मीडिया में हा-हाहाकार मच गया। निंदा करने वाले वीरों की फौज उमड़ आती है।

चुनाव खत्म होने के बाद साथ-साथ खाया, पिया, मिले, बैठे। तू मेरा चांद मैं तेरी चांदनी गा-गाकर सारे गिले-शिकवे दूर किए। गरीबों की सुनो वह तुम्हारी सुनेगा वाली तर्ज पर बहुत से लोग किसी गरीब के यहां भोजन करते दिखते हैं। कोई गरीब के बच्चों को गोद में उठाता है, उनसे नाते-रिश्तेदारी जोड़ता है। महिलाओं के देखते ही चरण छूने बढ़ता है और रक्षाबंधन न होते हुए भी राखी के लिए कलाई आगे कर देता है। एक वोट का सवाल जो ठहरा बाबा। चुनाव से पहले वोट के लिए कुछ भी करवा लो। गीत-संगीत का बोलबाला होता है। किसी के रथ के आगे बैंड-बाजा चल रहा है और नेता जी बैलगाड़ी, ट्रैक्टर, टैम्पो पर सवार हैं। या अपनी खुली जीप पर बैठे हैं अथवा हेलिकाप्टर से पधारे हैं और लोग उन्हें देखने को उमड़े पड़ रहे हैं। नारों से आसमान गुंजायमान है।

किसी बड़े मेले जैसा दृश्य है। लोग बैठे हैं, खड़े हैं, तालियां बजा रहे हैं। धन्य भाग हमारे कि आपके दर्शन हुए। फिर पांच साल में अगर जीते तो कब होंगे पता नहीं। और अगर हार गए तो भी पता नहीं। लोग फूलमालाएं लेकर खड़े हैं जयकारा लगा रहे हैं-हमारा नेता कैसा हो3 अमुक जैसा हो। जब तक सूरज- चांद रहेगा नेता जी तुम्हारा नाम रहेगा। सूरज-चांद तो अपनी जगह रहते हैं मगर नेताओं के नाम-काम बदलते जाते हैं। न जाने कितने भोज आयोजित किए जाते हैं कि शादी-बारात में जा रहे हों। लोगों को किसी अवसरदानी की तरह मुफ्त की चीजों के वायदे में लपेटा जाता है। मुझे जिताओ तो मैं टीवी दूंगा, फ्रिज दूंगा, शादियां करवाऊंगा, पढ़ाऊंगा, लिखाऊंगा, नौकरियों का बंदोबस्त करूंगा, मुफ्त इतने हजार रुपये दूंगा। अन्नदाताओं के पांव पड़ूंगा आदि-आदि। उनकी तरह कुछ पल के लिए निराई करूंगा, पराली का बोझ ढोऊंगा, हल और ट्रैक्टर चलाऊंगा। इन दिनों तो सब आपके हवाले, बस वोट मेरे हवाले कर देना भाइयो और बहनो। माताओं और बेटियो। शरणागत की रक्षा करना तो हमारा धर्म रहा है, अब मुझ जैसे की रक्षा करना भी आपका फर्ज है। जो कुर्सी सपने में आती है, प्लीज उस पर बिठा देना, भगवान आपका भला करेगा।

फ्री बस सेवा और रेल सेवा कर दूंगा। फ्री-फ्री का बोलबाला है। इस फ्री के लिए पैसे कहां से आएंगे, सरकारी खजाने में बाकी योजनाओं के लिए कुछ बचेगा या नहीं राम जाने। हमें तो लोगों का लालच जगाकर वोट लेने हैं, बाकी जय सियाराम। भाषणों में ऐसे कुलाबे भिड़ाए जाते हैं कि जो लोग भाषण लिखते होंगे उनके पास भी शब्द कम पड़ जाते होंगे। ऐसे-ऐसे उपक्रम होते हैं कि सेलिब्रिटीज भी शरमा जाएं। बैंड-बाजे, ढोल-तांसे, नाच गाने वाले, लोक कलाकार, लाउडस्पीकरों, पार्क, खुली जगहों की शादी के सीजन की तरह भारी बुकिंग देखी जाती है। हर तरफ मुस्कुराहट और विनीत नेताओं की धीरोदात्त नायकों की तरह भीड़ लग जाती है। सत्य हरिश्चंद्र के सारे अवतार जैसे धरती पर उतर आते हैं।

ऐसे दृश्य फिर कहां। पांच साल बाद ही तो देखने को मिलते हैं। तो कोई क्यों न देखे। ड्रामा, एडवेंचर, वीरता, अतिशयोक्ति हर तरह का मिर्च-मसाला यहां मिलता है। इसमें कोई मिलावट नहीं पाई जाती। जितने दल उतनी ही तरह की बयानबाजी, एक-दूसरे को नीचा दिखाने के हथकंडे, बात ही बात में पलट जाने, झूठ का सच बनाने और सच को झूठ बनाने की कलाकारी। कौन कवि है जो इसकी बराबरी कर सकता है। फिर नाटकीयता की भरमार कि बड़े से बडे सुपरस्टार भी पानी मांगें। रोज की यह फिल्म चलती ही जाती है। गली-नुक्कडों, सभा-सोसायटी में बहस का विषय बनती है। समर्थक, विरोधी भिड़ जाते हैं। नेता जी के पास खबर पहुंचती है तो वे फूले नहीं समाते। ईश्वर ने उन्हें अच्छा बोलने की जो क्षमता सौंपी है, उसी से तो लोग प्रभावित होते हैं और उनकी बातें बहस का विषय बनती हैं। नेता न हों, और रूठ मटक्का न हो तो कैसा लोकतंत्र। जिसे टिकट मिल गई वह जीत के सपने देख रहा है। जिसे नहीं मिली वह पार्टी छोड़ने को तत्पर है। और जिस पार्टी को कल तक पानी पी-पीकर कोस रहा था, वहां जाने की राह तलाश रहा है। क्या पता वहां किस्मत खुल जाए और टिकट मिल जाए। पैसों की बरसात भी होने लगे। जय हिंद, जय हिंद के नेता। बाकी के देश और नेता हमें भला चकित भाव से क्यों न देखें। इसीलिए तो इंग्लैंड और अमेरिका में भी बहुत- से नेता भारत के नेताओं की नकल करने लगे हैं। पर नकल में वह अकल कहां। इतना मनोरंजन और इलेक्शन खिड़की पर सफलता कहां। धन्य हैं हम।

तो देखते रहिए इस सुपर-डुपर हिट फिल्म को। हंसिए अपने कमरे में, गाली दीजिए, प्रशंसा करिए, आलोचना करिए सब इसी इलेक्शन रूपी फिल्म का बेजोड़ हिस्सा है। यह फिल्म दर्शक यानी वोटरों को ही ध्यान में रखकर बनाई गई है। फ्री के इस जमाने में ऐसा फ्री का मनोरंजन घर बैठे और कहां मिलता है। बड़ी से बड़ी फिल्म, नेटफ्लिक्स पर आने वाले कार्यक्रम या टीवी पर चलने वाले धारावाहिक इसका मुकाबला नहीं कर सकते।

नखरों की कार करें हरदम बेकरार

बरसों पहले विज्ञापन आया था, 'पड़ोसी की जले जान, आपकी बढ़े शान।' आजकल है 'कार ऐसी खरीदिए, दूसरे आपा खोएं।' कार ऐसी खरीदिए जो हर कहीं पार्क करनी मुश्किल हो। सब जगह ले जाने का दिल न करे। कभी स्वादिष्ट खाने का न्योता मिले तो हिसाब लगाना पड़े। उनका घर, उस चौराहे से दाएं तरफ उस सड़क पर, बाएं मुड़कर उस गली में है, वहां गाड़ी ले जाएं तो पार्क कहां करेंगे। अन्दर जगह कम है। वहां गली वालों की गाड़ियां खड़ी होंगी, ले गए और जैसे-कैसे पार्क कर दी तो मोड़नी मुश्किल हो जाएगी। कहीं ठुक गई तो एक स्क्रैच हटवाने के सैकड़ों और एक डेंट के हज़ारों लग सकते हैं। इसलिए वहां जाना ही क्यूं जहां शानबढ़ाऊ कारजी पार्क करने के लिए उचित जगह न हो।

कार ऐसी खरीदिए जिसकी सुविधाओं बारे पता न चले। सुविधाएं वही हों जिनकी ज्यादा ज़रूरत न हो। आजकल विशेषताएं इतनी हैं कि देख-सुन, मन आपा खोए। टेस्ट ड्राइव लेते ही कीमत भूल जाए। कारजी घर आएं तो अजनबी हसीना की तरह, सब कुछ डिज़ाइनर पहन कर छाई हों। कार के फिचर्ज़ बढ़ती उम्र वालों के पल्ले न पड़ें। नई कार तो बच्चों और उनकी मम्मी की पसंद की ही लेनी होती है। पुरानी कार की याद तो आती रहेगी। ज़िंदगी जुगाड़ और संघर्ष में कटी, अब लग्जरी कार की गोद में लेटेगी।

नए फीचर, हसीनाओं की हाई स्लिट ड्रेस की तरह रिझाने के लिए होते हैं, बस, बंदा फिसल जाए। व्यापारिक मुस्कराहट लिए, कर्ज़ देने वाले भी आपका हाथ और शरीर पकड़ने को तैयार हैं। बैंड बजाते इतने रास्ते, कर्ज़ दिलाने की तरफलिए जा रहे हैं। आजकल के ज़माने में भी, 'घर के बाहर हाथी खड़ा है' वाला ख्वाब कार खरीदकर पूरा हो सकता है। हां, विशेषताएं ऐसी होने चाहिए जो अच्छी तरह समझने के बाद भी याद न रहें। वैसे एक लिस्ट सामने लटका सकते हैं या फिचर्ज़ खुद ही कहते रहें, मालिक, हमें प्रयोग करो। वैसे तो ज्यादातर विशेषताएं शांत ही रहती हैं इसलिए पता नहीं रहता ।

सामान खरीद कर, उसकी सुन्दर रंगारंग पैकिंग उतारते हुए अच्छा लगता है। वीडियो भी बनाया जाता है। घर में खूब बधाइयां आती हैं लेकिन कुछ दिनों बाद ही लगता है, कार से लाखों रुपये में दिन में तारे देखने जैसा अनुभव है। खैर, अब यह विचार पुराना हो गया है कि समझदारी तो वही कार खरीदने में है जिसे मजे से खुद ड्राइव कर सकें। सहजता से पार्क कर सकें और गाड़ी आपकी संतुलित खर्च करूं जेब से निकली हो और पड़ोसियों के भी काम आ सके।

लेखकः- संतोष उत्सुक

खरसोदा में युवक और गुलाना में युवती ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

युवक के मामले हिन्दू संगठन के लोगों का लगा जमावड़ा, पुलिस ने दोनों मामलों को लिया जांच में

माही की गूंज, शाजापुर।

जिले के सलसलाई थानांतर्गत ग्राम खरसोदा निवासी एक युवक का शव गांव के पेड़ पर लटका मिला। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने शव को पेड़ से उतारकर पीएम के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया। इधर गुलाना में भी एक युवती ने अपने घर पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने दोनो मामलों में मर्ग कायम कर जांच में लिया है।

जिला अस्पताल में युवक के शव पीएम कर शव परिजनों को सौंप दिया गया। इधर जिला अस्पताल में भी हिन्दू संगठन के लोगों की भीड़ लग गई। जिन्होंने पुलिस से मामले में निष्पक्ष जांच कर कार्यवाही की मांग की है। बताया जा रहा है कि, युवक को कुछ लोगों द्वारा बंधक बनाया गया थां इसके बाद से ही वह तनाव में था।

मामले में निष्पक्ष कार्यवाही करे, अन्यथा आंदोलन करेगा बजरंग दल

मामले को लेकर बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारियों ने भी इस घटना का विरोध करते हुए पुलिस प्रशासन से निष्पक्ष जांच व उचित कार्यवाही की मांग की है। विहिप के विभाग मंत्री राजेश जादम ने बताया कि इस घटना को आत्महत्या में बदलकर फाईल बंद करने का प्रयास न किया जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि जिस गाड़ी में डॉ. लक्ष्मी नारायण को बंधक बनाया गया था उसके अंदर प्रतिबंधित पीएफआई के झंडे तथा कई अन्य आपत्तिजनक सामग्रियां रखी हुई थी। हिंदू संगठन ने मांग की है कि मामले से जुड़े आरोपियों के खिलाफजल्द कार्रवाई हो। घटना की जानकारी लगने के बाद ज़िला अस्पताल में बड़ी संख्या में हिंदू संगठन के लोग जमा हो गए।

युवती ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

गुलाना निवासी एक युवती ने भी अज्ञात कारणों के चलते अपने घर पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। जानकारी के अनुसार घटना सोमवार रात की है। जहां हीरामणी पिता छगनलाल सौराष्ट्रीय (19) ने अपने घर पर फांसी लगा ली। जब परिजनों को पता चला तो वे उन्होंने युवती को फंदे से उतारा और जिला अस्पताल लेकर पहुंचे जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। कोतवाली पुलिस ने मर्ग कायम कर मामला जांच मे लिया है।

मामले में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक टीएस बघेल ने बताया कि, मृतक का नाम लक्ष्मीनारायण मेवाड़ा है जो सलसलाई थाना क्षेत्र के खरसोदा गांव का निवासी है। जिसने फांसी लगाकर आत्महत्या की है। बंधक बनाने और मृतक युवक द्वारा पूर्व में पुलिस को आवेदन देने सहित सभी बिंदुओं पर जांच की जा रही है।

चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस प्रत्याशी को मिली जमानत

माही की गूंज, मंदसौर।

मध्यप्रदेश में 1 महीने बाद चुनाव होना है। ऐसे में कांग्रेस और भाजपा तैयारी में जुटी हुई है। वहीं प्रत्याशी भी बचकर चल रहे हैं कि कहीं उनपर चुनाव आयोग कोई कार्रवाई न कर दें।

इसी बीच मध्य प्रदेश के मंदसौर के सुवासरा से कांग्रेस प्रत्याशी राकेश पाटीदार को पुलिस ने फरार घोषित कर एक पुराने प्रकरण में अदालत में चालान पेश कर दिया। इसके बाद आनन-फानन में आज कोर्ट से कांग्रेस प्रत्याशी राकेश पाटीदार ने अपनी जमानत करवाई।

दरअसल कमलनाथ सरकार गिरने के बाद कांग्रेस ने संविधान बचाओ तिरंगा यात्रा निकाली गई थी। इस यात्रा के दौरान आईपीसी की धारा 188 के तहत तत्कालीन जिला कांग्रेस अध्यक्ष नव कृष्ण पाटिल, नगर पालिका पूर्व अध्यक्ष हनीफ शेख और सुवासरा से कांग्रेस प्रत्याशी राकेश पाटीदार पर पुलिस ने मामला दर्ज किया था। इस पुराने मामले में कुछ दिन पूर्व पुलिस ने

अदालत में तीनों को फरार बताते हुए चालान पेश कर दिया। इसकी भनक लगते ही आनन-फानन में कांग्रेस प्रत्याशी और कांग्रेस नेता आज कोर्ट पहुंचे और अपनी जमानत करवाई।

क्या कहा कांग्रेस प्रत्याशी ने

वहीं सुवासरा से कांग्रेस प्रत्याशी राकेश पाटीदार ने बताया कि, जब हमारे ऊपर धारा 188 के तहत मामला दर्ज किया गया था। तब हम तत्कालीन एसपी से मिले थे। उन्होंने भरोसा दिया था कि इसका खात्मा कर देंगे। हम न्याय पालिका का सम्मान करते है और हमें पूरा भरोसा है। जैसे ही हमें पता चला की इस प्रकरण में चालान पेश हुआ है। हम तत्काल न्याय पालिका की शरण में आए और हमने अपनी जमानत के लिए आवेदन प्रस्तुत किया।

तीनों को कोर्ट से मिली जमानत

कांग्रेस नेता एडवोकेट राघवेंद्र तोमर ने बताया कि, अभी दो तीन पहले पता चला कि इन्होंने फरारी में कोई चालान पेश कर दिया है। तो जैसे ही सूचना मिली तो हम कानून का सम्मान करते है और गांधीवादी तरीके से सब काम करते है। आज हम स्वयं जिला कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष पूर्व विधायक नवकृष्ण पाटिल, सुवासरा से प्रत्याशी राकेश पाटीदार और पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष हनीफशेख तीनों यहां अदालत में आए और जमानत का आवेदन दिया। जिस पर अदालत ने तीनों को पंद्रह-पंद्रह हजार की जमानत दिए जाने का आदेश दिया है। हम इस प्रकरण को आगे लड़ेंगे।

दो अलग स्थानों पर एक महिला और एक पुरुष का मिला शव, महिला की नहीं हो पाई शिनाख्त

माही की गूंज, मंदसौर।

शहर के दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में एक महिला और एक पुरुष के शव बरामद हुए हैं। पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवा दिया है।यशोधर्मन नगर थाना क्षेत्र के इंडस्ट्रियल एरिया एलआईसी के पास झाड़ियों में एक व्यक्ति का शव दिखाई देने की सूचना स्थानीय लोगों ने पुलिस को दी थी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर जिला चिकित्सालय पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया।

पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान संजय हिल्स क्षेत्र में रहने वाले गोपाल पिता सुरेश खारोल (35) के रूप में हुई है। मृतक ड्राइवरी करता था घर में पत्नी और एक 8 साल का बेटा है। मृतक 15 अक्टूबर रविवार को घर से निकला था। सोमवार को परिजनों ने थाने में गुमशुदगी दर्ज करवाई थी। मंगलवार को उसकी लाश इंडस्ट्रियल इलाके में झाड़ियों में पड़ी मिली। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

वहीं, सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र में एक महिला का शव मिला है। मृतक महिला की शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस के अनुसार महिला के दाहिने हाथ में अनीता नाम लिखा हुआ है। मामले में पुलिस ने मर्ग दर्ज किया है।

मक्का, मिर्च और तुवर के बीच बोए थे गांजे के पौधे, पुलिस ने मारी दबिश

पहले गिड़गिड़ाया फिर बोला आरोपी कि हो जाती इससे अच्छी कमाई

माही की गूंज, रतलाम।

मध्यप्रदेश के रतलाम में एक किसान फसल की आड़ में नशे की पौध तैयार करते गिरफ्तार हुआ है। पुलिस की दबिश में खुली पोल के बाद अवैध मादक पदार्थ की पौध तैयार करने वाला किसान पहले तो गिड़गिड़ाया और फिर कबूला कि इससे अच्छी कमाई हो जाती है। आरोपी किसान के खिलाफपुलिस ने एनडीपीएस एक्ट में प्रकरण दर्ज किया है। बिलपांक थाने के बिरमावल चौकी प्रभारी मुकेश सस्तिया ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर टीम गठित कर ग्राम जैतपाड़ा में दबिश दी गई थी। आरोपी किसान रुघनाथ (48) पिता पीरू भाभर ने अपने खेत में मक्का, मिर्च और तुवर की फसल के बीच अवैध तरीके से गांजे के पौधे उगा रखे थे। उक्त खेत से गांजे के कुल 16 पौधे जब्त किए गए। पुलिस ने पाया कि आरोपी रुघनाथ भाभर लंबे समय से फसल की आड़ में अवैध नशे के पौधे तैयार कर रहा था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की कार्रवाई की है।

मंदसौर के जज की कार से उड़ाया पर्स व दो तोला सोना

पुलिस की गिरफ्त में आया नाबालिग, मिल गया पर्स

माही की गूंज, रतलाम। मंदसौर में लेबर कोर्ट के जज जय पाटीदार की कार से पर्स चुराने वाले एक नाबालिग को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पर्स में उनके दस्तावेज के साथ ही दो तोला सोने का आभूषण रखे हुए थे। पुलिस ने तत्परता से कार्रवाई हुए बाल चोर को पकड़ने में सफलता हासिल की है। जज किसी कार्य से रतलाम आए थे। वे पॉवर हाउस रोड से मंगलवार शाम कार से जा रहे थे। इसी दौरान एक अज्ञात व्यक्ति जो पैदल जा रहा था उसने इशारा करके कहा कि कार से कुछ आइल टपक रहा है। जज ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया लेकिन सैलाना रोड ओवर ब्रिज पर कार रोककर बोनट चेक किया। बोनट खोलकर चेक करके जैसे ही वे कार में लौटे तो सीट पर रखा उनका पर्स गायब हो गया। पर्स में उनके दस्तावेज के साथ ही दो तोला सोने का आभूषण गायब हो चुका था। जज की रिपोर्ट पर चौकी हाट रोड थाना डीडी नगर पर अज्ञात व्यक्ति की विरुद्ध प्रकरण दर्ज किया। अज्ञात आरोपी की पहचान एवं चोरी गए सामान की बरामदगी के लिए पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में थाना प्रभारी डीडी नगर सुरेंद्र कुमार गडरिया एवं चौकी प्रभारी हाट रोड अनुराग यादव के नेतृत्व में टीम गठित की गई। टीम द्वारा मुखबिर सूचना के आधार पर नाबालिग बालक को अभिरक्षा में लेकर चोरी गया समान 2 तोला सोना, पर्स, एटीएम कार्ड, आईडी कार्ड सहित कुल 1 लाख 30 हजार कीमती चोरी किया सामान बरामद किया।

केदार परमार ने एबीवीपी के से दिया इस्तीफा एनएसयूआई में ली सदस्यता

माही की गूंज, शाजापुर।

केदार परमार द्वारा एबीवीपी के सहमंत्री पद से इस्तीफा देकर एनएसयूआई की रीति नीति और छात्रों के हित के लिए समर्पण भाव देखकर एवं उनसे प्रभावित होकर छात्र नेता अजय जाट की उपस्थिति में भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) में सदस्यता ग्रहण की। केदार परमार द्वारा बताया गया कि, एबीवीपी ने मुझे पद का लालच देकर सदस्यता लेने के लिए कहा। कॉलेज की दीवारों पर एबीवीपी लिखवा कर सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचने को कहा। कॉलेज के कर्मचारियों द्वारा महाविद्यालय की दीवारों पर लिखे एबीवीपी को मिटाने पर उसे डराने के लिए कहा। इस कारण में एबीवीपी के पद से इस्तीफा देकर एनएसयूआई में सदस्यता लें रहा हूं एवं मैं भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन एनएसयूआई में महात्मा गांधी एवं इंदिरा गांधी जी के विचारों को हमेशा आगे बढ़ता रहूंगा एवं छात्र की लड़ाई लड़ता रहूंगा।

राजराजेश्वरी माता मंदिर में 54 वर्षों से जल रही अखंड ज्योति

माही की गूंज, शाजापुर।

शारदीय नवरात्र का आगाज हो गया है। माता जी के पंडाल भी सज गए हैं। अब नौ दिन के लिए क्षेत्र में वातावरण भक्तिमय हो गया और लोग माता की भक्ति में डूबे रहेंगे। मंदिरों और पंडालों में सुबह शाम आरती, छप्पन भोग और जागरण इत्यादि कार्यक्रम का आयोजन नौ दिन में लोगों को देखने को मिलेगा। घर-घर में कन्या भोजन, हवन, पाठ पूजा लोग करेंगे।

मंदिर की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली

शाजापुर का विश्व प्रसिद्ध राजराजेश्वरी माता मंदिर परिसर आकर्षक विद्युत सज्जा से जगमगाने लगा है। चैत्र नवरात्रि को लेकर मंदिर में तैयारियां की गई हैं और माता के दरबार को सजाया गया है। मां राजराजेश्वरी के दरबार में नौ दिनों तक माता की आराधना होगी। श्रद्धालु धार्मिक आयोजनों का आनंद भी ले सकेंगे। मंदिर की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली है और यहां दूर-दूर से कई लोग आते हैं और माता के दर्शन कर मेले का भी आनंद उठाते हैं। मंदिर परिसर में मेला भी लग चुका है,मेले के लिए व्यापारी कई दिनों पहले ही अपना सामान लेकर यहां आ गए थे।

विश्व के 52 स्थानों पर शक्तिपीठ मंदिर स्थापित

मां राजराजेश्वरी मंदिर के पुजारी पं.आशीष नागर ने बताया कि, माता के दरबार में 54 सालों से अखंड ज्योति जल रही है। दादाजी मंदिर के पुजारी स्व. पं. हरिशंकर नागर ने बताया था कि मां राजराजेश्वरी के दरबार में देश की चारों पीठों के शंकराचार्यों ने दर्शन करने के बाद इसे 52वां गुप्त शक्तिपीठ बताया था।

पंडित नागर ने बताया कि, मां राजेश्वरी मंदिर का जीर्णोद्धार राजा भोज के कार्यकाल में 1060 में हुआ था। पूर्व में माता के गर्भगृह के ठीक बाहर के स्थान पर शनिदेव मानकर पूजन किया जाता था। 1968-1969 से अखंड ज्योत जल रही है। दादाजी पं. हरिशंकर नागर को स्वप्न आया था कि यहां शिव परिवार की प्रतिमा है। वर्षों पहले मंदिर के विस्तार के दौरान की गई खोदाई में माता के चरण, चिमटा, त्रिशूल मिला था।

शाजापुर में मां का दाहिना चरण गिरा था

स्कंद पुराण में इसे शक्तिपीठ बताया गया है। मान्यता है कि शक्तिपीठ के दर्शन मात्र से ही लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। मां सती के साथ भोलेनाथ सहित शिव परिवार मूर्ति के रूप में मिले थे। मंदिर में 54 सालों से अखंड ज्योत जल रही है। विश्व के 52 स्थानों पर शक्तिपीठ मंदिर स्थापित हैं।

मान्यता है कि, राजा दक्ष ने जब हवन किया तो उस समय मां सती व भोलेनाथ को नहीं बुलाया गया था। जब माता सती यज्ञ में गई तो उनके पिता राजा दक्ष ने भोलेनाथ का अपमान किया। पति का अपमान होने के कारण माता सती अग्निकुंड में कूद गईं। इसके पश्चात भोलेनाथ माता सती को गोद में लेकर घूमते रहे। इस दौरान माता सती के एक-एक अंग गिरते रहे। शाजापुर में मां का दाहिना चरण गिरा था, जो आज भी मंदिर के गर्भगृह में विद्यमान हैं। मां राजराजेश्वरी का मंदिर चीलर नदी के तट पर है। तंत्र-मंत्र की सिद्धि के लिए मंदिर की प्रसिद्धि दूर-दूर तक है।

एमसीएक्स सट्टा कारोबारी का पुलिस ने शहर भर में निकाला जुलूस

माही की गूंज, रतलाम।

शहर के माणकचौक थाना क्षेत्र में पकडे गए एक एमसीएक्स सट्टा कारोबारी की गिरफ्तारी के बाद उसके मोबाइल से अवैध वसूली का राज खुल गया। जब पुलिस को अवैध वसूली करने न वालों का पता चला तो उन्हे पकड कर पूरे शहर में उनका जुलूस निकाला गया। मिली जानकारी के अनुसार माणकचौक पुलिस ने एमसीएक्स का सट्टा करने वाले अभय कपडा को गिरफ्तार किया था। अभय की गिरफ्तारी के बाद जब उसका मोबाइल चैक किया गया तो उसके मोबाइल के काल रेकार्ड से पता चला कि ललित सिसौदिया नामक व्यक्ति 10 लाख रुपए की वसूली के लिए उसे धमका रहा था। जांच में पता चला कि, अभय कपडा के पास एमसीएक्स सट्टा कारोबार की मास्टर आईडी थी, जिसे उसने ललित सिसौदिया और ऋषि जायसवाल को दे रखा था। ये दोनो व्यक्ति अभय कपड़ा के माध्यम से एमसीएक्स के सट्टे में लिप्त थे। माणकचौक पुलिस को जब इन बातों की जानकारी मिली, तो पुलिस ने इन दोनो बदमाशों को गिरफ्तार किया और पूरे शहर में इनका जुलूस निकाला। माणकचौक थाना प्रभारी प्रीति कटारा के नेतृत्व में पुलिसकर्मी उक्त दोनो बदमाशों को माणकचौक थाने से लेकर निकले और शहर के मुख्य बाजार में इनका जुलूस निकालते हुए दो बत्ती पंहुचे। दो बत्ती से स्टेशन रोड होते हुए यह जुलूस रेलवे स्टेशन तक जा पंहुचा। माणकचौक थाना प्रभारी प्रीति कटारा ने बताया कि, उक्त दोनो आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया था, जहां से उन्हे एक दिन के पुलिस रिमाण्ड पर भेजा गया है।

अवैध रूप से गांजे बेचने वाले आरोपी को 4 वर्ष का कारावास एवं अर्थदण्ड से किया दण्डित

माही की गूंज, बडवानी।

विशेष न्यायधीश बड़वानी रईस खान के द्वारा पारित अपने निर्णय मे घटना 5 मार्च 2021 को पुलिस थाना सेंधवा शहर मे पदस्थ उपनिरीक्षक आर.सी.सोलंकी को मुखबिर सूखना प्राप्त हुई कि ग्राम टैगोर बैडी सेंधवा पर आसमानी रंग का शर्ट पहने हुए एक प्लास्टिक की हरी थैली मे गांजे की पुडिया लिये खडा है। जो किसी व्यक्ति का इंतजार कर रहा है। मुखबिर की

सुचना पर विश्वास करते हुये घटना स्थल पर पहुँचने पर आरोपी अनिल पिता रूपसिंह वास्कले के कब्जे से विक्रय करने हेतु मादक पदार्थ कुल 1 किलो 250 ग्राम हरी थैली मे रखा पाया गया। उक्त अवैध मादक पदार्थ को जप्त कर प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। न्यायालय द्वारा अपने निर्णय में वर्तमान सामाजिक परिवेश में जबकि मादक पदार्थो की अवैध रूप से क्रय विक्रय का अवैध व्यापार किये जाने के मामलों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी होती जा है, जो तथ्य किसी एक व्यक्ति को नही अपितु सम्पूर्ण समाज को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। ऐसी स्थिति में प्रकरण के तथ्य एवं परिस्थितियों को एवं अभियुक्त की आर्थिक परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए न्याय के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु आरोपी अनिल को 4 वर्ष के कठोर कारावास एवं अर्थदण्ड से दण्डित किया गया है। प्रकरण में अनुसंधान उपनिरीक्षक आरसी सोलंकी एवं शासन की आरे से पैरवी जगदीश यादव अतिरिक्त लोक अभियोजक बड़वानी के द्वारा की गई।

नवरात्रि एवं दशहरा पर्व के मद्देनजर एसडीएम बनाये रखे कानून एवं शांति व्यवस्था- कलेक्टर

माही की गूंज, बडवानी।

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी डॉ. राहुल फटिंग ने नवरात्रि एवं दशहरा पर्व शांतिपूर्वक मनाये जाने हेतु जिले के चारों अनुविभागीय अधिकारियों को पत्र भेजकर कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था के संबंध में निर्देश जारी किये है। जारी निर्देश में उल्लेखित किया गया है कि, नवरात्रि एवं दशहरा पर्व के आयोजन के दौरान कोई भी व्यक्ति धारदार हथियार लेकर नही चलेंगे और ना ही ऐसे कोइ अशोभनीय गाने बजायेंगे जिससे कानून व्यवस्था की स्थिति निर्मित हो। गाव एवं कस्बो में चल समारोह के माध्यम से माता विसर्जन एवं रावण दहन वाले स्थलों का आयोजनकर्ताओ से आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की सूची ली जावे। रूट चार्ट अनुसार राजस्व एवं पुलिस अधिकारी चल समारोह के मार्ग का निरीक्षण कर लेवे ताकि चल समारोह के दौरान कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था की स्थिति निर्मित न हो। दशहरा पर्व के दौरान निकाले जाने वाले चल समारोह एवं जुलूस की अनुमति अनिवार्य रूप से आयोजनकर्ताओं के द्वारा ली जाये। समस्त अनुविभागीय दण्डाधिकारी अपने-अपने अनुभाग क्षेत्र में कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर कार्यपालिक मजिस्ट्रेट नियुक्त करे। पर्व के दौरान शासकीय चिकित्सालयों में आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त संख्या में जीवन रक्षक औषधि, एम्बुलेंस, मेडिकल टीम तैनात की जाए।

विधानसभा निर्वाचन 2023 हेतु जिले में वाहनों की सतत् चेकिंग हो रही

माही की गूंज, धार।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा के निर्देशानुसार विधानसभा निर्वाचन-2023 को दृष्टिगत रखते हुए जिले में वाहनों की सघन चेकिंग की जा रही है। इसी कड़ी में विधानसभा क्षेत्र सरदारपुर में एसएसटी चेक प्वाइंट दत्तीगांव टोल प्लाजा में रिटर्निंग अधिकारी सरदारपुर राहुल चौहान एवं एसडीओपी आशुतोष पटेल, पुलिस विभाग के द्वारा संयुक्त रूप से वाहनों की चेकिंग की गई।

गरबों के माध्यम से दिया निष्पक्ष मतदान का संदेश

माही की गूंज, बडवानी।

स्वीप गतिवधियो के अंतर्गत कल रात्रि में शहर के रणजीत चौक में 40 वर्षो से संचालित गरबा मंडल स्वर संगम में हजारों दर्शको एवं कलाकारों को बीआरसी बड़वानी सुनीता मोरे एवं शिक्षक अनिल जोशी संचालक स्वर संगम गरबा मंडल द्वारा निष्पक्ष एवम अनिवार्य मतदान की सपथ दिलाई गई तथा संकल्प दिलवाया गया कि 17 नवंबर को आने वाले विधानसभा चुनाव में सभी लोग मतदान अवश्य करेंगे। इस अवसर पर स्वीप गतिविधियों की प्रभारी सीडीपीओ कविता चौहान के निर्देशन में शहर की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता भी उपस्थित हुई एवं महिला दर्शको से संकल्प कराया गया। गुरमीत सिंह गांधी एवं आनंद कुमरावत ने भी अपील की है के सभी लोग अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित होकर अनिवार्य मतदान का संकल्प ले।

मतदान केंद्रों की साजसज्जा की तथा ग्रामीणों को मतदान केन्द्र में आने का दिया न्योता

माही की गूंज, बडवानी।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. राहुल फटिंग के निर्देश पर जिले में स्वीप गतिविधियों का दौर जारी है। नित नये प्रयोग एवं नवाचार के माध्यम से पुरजोर प्रयास किए जा रहे हैं कि मतदाता अपने अधिकार एवं कर्तव्यों के प्रति सजग हो सके। कोई भी मतदाता मतदान से वंचित न रहे। मतदाताओं की चुनाव में शतप्रतिशत भागीदारी हो तथा बिना प्रलोभन मतदान हो।

इसी तारतम्य में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भवती के स्वीप कार्यकर्ताओं ने अपने नवाचार से ग्रामीणों का ध्यान विधानसभा निर्वाचन 2023 हेतु आकृष्ट किया। उन्होंने ग्राम के 2 मतदान केंद्रों की साजसज्जा की तथा ग्रामीणों को मतदान केन्द्र में आने का न्योता दिया। मतदाता जागरूकता हेतु बनाए गए पोस्टर्स के साथ बच्चों और ग्रामीणों ने सेल्फी भी क्लिक की। बालिकाओं के अपनत्व भाव से लगाए नारों ÷काका-काकी मान जाओ, वोट डालोगे कसम खाओ÷ ने ग्रामीणों का ध्यान आकृष्ट किया। शाला के विद्यार्थियों ने अभिनव गतिविधि ÷क्या आप जानते है?÷ आधारित चुनाव से जुड़े विविध प्रश्नों और उत्तर लिखी तख्तियों के माध्यम से ग्राम भ्रमण किया। विधानसभा निर्वाचन 2023 किस तारीख को है?, मतदान का समय क्या है?, मतदान के दिवस मतदाता पहचान के रूप में क्या ले जा सकते हैं?, विकलांग मतदाता का साथी कौन बन सकता है? आदि प्रश्नों के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक करने का प्रयास किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों के 7 समूहों में 105 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। अपने-अपने प्रभारी शिक्षकों के मार्गदर्शन में उन्होंने ग्राम के मुख्य स्थलों को गरबा नृत्य प्रस्तुत किया। गरबा नृत्य में गीत ÷आयो रे चुनाव आयो रे, म्हारा भाया, काका-काकी वोट डालजो रे.....÷ पर बच्चे झूमते दिखाई दिए। गरबा देखने आए ग्रामीण पुरुष-महिलाओ की भीड़ को संबोधित कर शिक्षक प्रमोद कुमार पटेल ने लोकतंत्र निर्माण में वोट की अमूल्य भूमिका पर जानकारी दी साथ ही बिना प्रलोभन मतदान की अपील की। इस अवसर पर मतदान केंद्र क्रमांक 81 एवं 82 भवती के बी.एल.ओ माधव सिंह जामोद एवं केसर सिंह जामोद का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ। मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक करते हुए मतदाताओं को मतदान करने की शपथ दिलाई गई।

12 वैकल्पिक फोटोयुक्त दस्तावेजों में से कोई एक भी दिखाकर मतदाता कर सकेंगे मतदान

माही की गूंज, बडवानी।

यदि किसी मतदाता का नाम मतदाता सूची में दर्ज है परंतु उसके पास किसी वजह से मतदाता परिचय पत्र उपलब्ध नहीं है तो भी वह मताधिकार का उपयोग कर सकेगा। मतदाता परिचय पत्र के अलावा 12 वैकल्पिक फोटो युक्त दस्तावेज दिखाकर मतदान कर सकेंगे। इसी प्रकार यदि किसी कारण से किसी नागरिक को मतदाता सूचना पर्ची प्राप्त नहीं होती है, लेकिन उसका नाम मतदाता सूची में दर्ज है तो भी वह मतदान कर सकेगा।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि सभी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में सभी मतदाताओं को फोटो पहचान पत्र जारी किया जा रहा है। जो मतदाता वोटर आईडी कार्ड प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं हैं, उन्हें अपनी पहचान स्थापित करने के लिए 12 वैकल्पिक फोटोयुक्त पहचान दस्तावेजों में से कोई एक दिखाना होगा। राजन ने बताया कि 12 वैकल्पिक फोटोयुक्त पहचान दस्तावेजों में आधार कार्ड, मनरेगा जाब कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटो सहित पेंशन दस्तावेज, केंद्र/राज्य सरकार/पीएसयू/सार्वजनिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, बैंक/डाकघर द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर के तहत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के तहत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, सांसदों/विधायकों/एमएलसी को जारी किए गए आधिकारिक पहचान पत्र और भारत सरकार के सामाजिक न्याय मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को जारी यूनिक डिसेबिलिटी आईडी शामिल है। अप्रवासी भारतीय मतदाताओं (एनआरआई) को केवल पहचान के लिए अपना मूल पासपोर्ट दिखाना होगा। यदि ईपिक में किसी मतदाता के फोटोग्राफआदि का मिलान न हो पाने के कारण मतदाता की पहचान करना संभव नहीं है, तो उस मतदाता को उपरोक्त 12 वैकल्पिक फोटोयुक्त दस्तावेजों में से कोई एक दिखाना होगा।

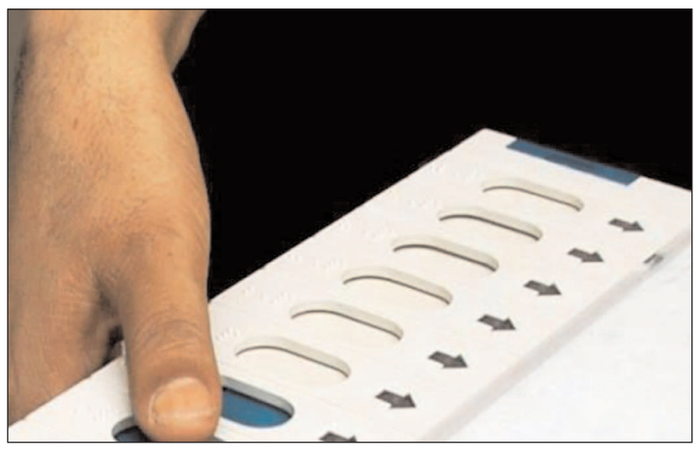

सी-विजिल एप पर कोई भी नागरिक कर सकेगा आदर्श आचरण संहिता के उल्लंघन की शिकायत

फोटो-वीडियो केप्चर करने के पांच मिनट के भीतर भेजनी होगी शिकायत

माही की गूंज, खरगोन।

चुनावी प्रक्रिया के दौरान आदर्श आचरण संहिता के उल्लंघन के मामलों की ऑनलाइन शिकायत के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा खास तौर पर तैयार किए गए सी-विजिल सिटीजन एप पर कोई भी व्यक्ति यदि उसे कहीं भी आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का मामला नजर आता है तो अपने मोबाइल से फोटो या वीडियो केप्चर कर इसकी शिकायत कर सकता है।

सी-विजिल एप को गूगल प्ले स्टोर से मोबाइल पर डाउनलोड किया जा सकेगा। इस एप का इस्तेमाल करने के लिए शिकायतकर्ता के मोबाइल पर जीपीएस और इंटरनेट चालू होना आवश्यक है। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के मामलों की ऑनलाइन शिकायतें इस एप के माध्यम से ही फोटो या वीडियो केप्चर कर की जा सकती है। वीडियो दो मिनट से अधिक का नहीं होना चाहिए। इससे अधिक अवधि का वीडियो एप पर अपलोड नहीं किया जा सकेगा। इसके साथ ही जिस मोबाइल से फोटो या वीडियो केप्चर किये गये हैं शिकायत केवल उसी से की जा सकेगी। किसी दूसरे मोबाइल या कैमरे की फोटो या वीडियो अथवा पहले से स्टोर फोटो या वीडियो इस एप पर अपलोड नहीं होगी। फोटो या वीडियो के साथ शिकायतकर्त्ता संक्षिप्त में प्रकरण के बारे में जानकारी भी दे सकता है। सी-विजिल एप पर शिकायत भेजते ही शिकायतकर्ता को यूनिक आईडी प्राप्त होगी जिसके माध्यम से वह अपने मोबाइल पर शिकायत को ट्रेक कर सकेगा और उसकी अद्यतन स्थिति जान सकेगा। मोबाइल पर जीपीएस चालू होने के कारण शिकायतकर्ता जैसे ही अपनी शिकायत एप पर अपलोड करेगा वो स्थल की लोकेशन सहित तत्काल जिला निर्वाचन कार्यालय के सम्पर्क केन्द्र के पास पहुंच जायेगी। जिला निर्वाचन कार्यालय के सम्पर्क केन्द्र में शिकायतों की मॉनीटरिंग के लिए बैठी विशेष टीम फोटो या वीडियो की लोकेशन के आधार पर संबंधित क्षेत्र की फ्लाइंग स्क्वाड टीम या एसएसटी को मौके पर पहुंचने के निर्देश देगी। फ्लाइंग स्क्वाड दल भी मौके पर पहुंचकर शिकायत के बारे में तहकीकात करेगा और स्थल का वीडियो बनाकर सी-विजिल इन्वेस्टीगेटर एप पर सीधे सम्बन्धित निर्वाचन क्षेत्र के रिटर्निंग अधिकारी को रिपोर्ट करेगा।यदि शिकायत सही पाई जाती है तो रिटर्निंग अधिकारी को इसे आगे की कार्यवाही के लिए निर्वाचन आयोग को भेजना होगी। सी-विजिल एप की खास विशेषता यह होगी कि इसके माध्यम से कोई भी नागरिक चुनावों के दौरान आदर्श आचरण संहिता के उल्लंघन की शिकायत इसके माध्यम से कर सकता है। शिकायतकर्ता को यह सावधानी बरतनी होगी कि मोबाइल से फोटो या वीडियो केप्चर करने के पांच मिनट के भीतर ही उसे अपनी शिकायत भेजनी होगी। जिला निर्वाचन कार्यालय को भी शिकायत मिलते ही उस पर तुरंत एक्शन लेना होगा और प्राप्त शिकायत को पांच मिनट के भीतर संबंधित क्षेत्र की फ्लाइंग स्क्वाड टीम को प्रेषित करना होगा तथा जाँच के लिए मौके पर भेजना होगा। फ्लाइंग स्क्वाड टीम को 100 मिनट के भीतर शिकायत का कम्प्लायंस देना जरूरी होगा अन्यथा ये शिकायत सीधे निर्वाचन आयोग को स्वतरू ट्रांसफर हो जायेगी। आयोग द्वारा समय पर शिकायत पर कार्यवाही न करने के लिए संबंधित फ्लाइंग स्क्वाड टीम से स्पष्टीकरण भी मांगा जा सकता है।

मतदान दलों के प्रशिक्षण में पहुंचे कलेक्टर

माही की गूंज, खरगोन।

विधानसभा चुनाव-2023 को लेकर मतदान दलों का प्रशिक्षण प्रारंभ कर दिया गया है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कर्मवीर शर्मा ने आज 17 अक्टूबर को सेंट ज्यूस हायर सेकेंडरी स्कूल खरगोन में पीठासीन अधिकारी एवं मतदान अधिकारी क्रमांक-01 को दिये जा रहे प्रशिक्षण का जायजा लिया और प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे शासकीय सेवकों से चर्चा की। इस दौरान एसडीएम भास्कर गाचले भी मौजूद थे।

कलेक्टर शर्मा ने इस दौरान पीठासीन एवं मतदान अधिकारियों से कहा कि, वे प्रशिक्षण में बताई गई बातों को ध्यान से सुनें और अच्छी तरह से समझें। समझ नहीं आने पर प्रशिक्षकों से सवाल कर अपनी जिज्ञासा का समाधान करें। जिले में निष्पक्ष एवं शांतिपूर्वक मतदान सम्पन्न कराना हम सबकी जिम्मेदारी है और इसमें मतदान दलों में नियुक्त शासकीय सेवकों की बहुत बड़ी भूमिका है। चुनाव कार्य में लगे सभी लोग निष्पक्ष एवं तटस्थ होकर कार्य करें। सभी पीठासीन एवं मतदान अधिकारियों को ईव्हीएम का संचालन करते अच्छी तरह से आना चाहिए। सभी लोग आयोग के निर्देशों का अच्छी तरह से अध्ययन कर लें और उनका कड़ाई से पालन सुनिश्चित करें। चुनाव कार्य में किसी भी तरह की लापरवाही पाये जाने पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी और किसी को भी बख्शा नहीं जायेगा। जिला प्रशासन मतदान दलों को मतदान केन्द्रों पर अच्छी सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा जिससे उन्हें मतदान कराने में किसी तरह की परेशानी ना हो।

शासकीय उचित मूल्य दुकान पर खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग ने की कार्रवाई

माही की गूंज, जोबट।

विकासखंड जोबट के ग्राम पंचायत बड़ागुड़ा में बुधवार को शासकीय उचित दुकान बड़ागुड़ा पर गांव के हितग्राहियों के द्वारा शिकायत करने पर खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग अलीराजपुर के फूड इंस्पेक्टर राम आवश्या के द्वारा करवाई की गई। वहीं फूड इंस्पेक्टर के साथ अमर सिंह पटेल और देवन द्वारा सेल्समैन के समक्ष पंचनामा बनाया गया। जिसमें गेहूं 194.6 क्विंटल , चावल 160.95 क्विंटल, नमक 2.47 क्विंटल, शक्कर 20 क्विंटल मिली बताया गया। लेकिन अन्य सामग्री जैसे मूंग, बाजारा, चना जैसी सामग्री को पंचनामा अनदेखा कर दिया गया। जबकि पीयूष मशीन में मूंग, बाजार, चना का स्टॉक शेष में कई क्विंटल में बता रहा है। जिसके बाद अब यह सवाल उठाए जा रहे है कि, क्या ग्राम बड़ागुड़ा की उचित मूल्य दुकान के सेल्समेन की जिले के अधिकारियों के सांठ-गांठ चल रही है।

रिटर्निंग अधिकारी कार्यालय से 100 मीटर का दायरा किया चिन्हित

माही की गूंज, खरगोन।

आगामी विधानसभा निर्वाचन-2023 के लिए खरगोन जिले की छः विधानसभा क्षेत्र की ईव्हीएम मशीनों का प्रथम रेण्डमाईजेशन दिनांक 16 अक्टूबर 2023 को किया गया है। इसके आधार पर विधानसभावार आवंटित ई.व्ही.एम मशीनों की छंटनी का कार्य कलेक्टर कार्यालय परिसर में स्थित ई.व्ही.एम वेयर हाउस में मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में प्रारम्भ किया गया। विधानसभा निर्वाचन-2023 के दौरान दिनांक 21 अक्टूबर 2023 से प्रत्याशियों के नाम निर्देशन लेना प्रारंभ हो जायेगा।

इसी परिप्रेक्ष्य में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कर्मवीर शर्मा ने पुलिस अधीक्षक श्री धर्मवीरसिंह एवं अन्य अधिकारियों के साथ आज 17 अक्टूबर को नवीन संयुक्त कलेक्ट्रेट भवन में 06 विधानसभा क्षेत्रों के नाम निर्देशन कक्षों का निरीक्षण किया गया। इसी के साथ नामांकन दाखिल करने वाले अभ्यर्थियों के वाहनों की पार्किंग व्यवस्था की जानकारी भी ली गई। मौके पर रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय से 100 मी. का दायरा चिन्हित करते हुए यह निर्देशित किया गया कि उक्त सीमा के भीतर किसी भी प्रकार के वाहनो का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा तथा 100 मीटर के दायरे में अभ्यर्थी सहित आयोग द्वारा अधिकृत अधिकतम चार व्यक्तियों को ही प्रवेश करने की अनुमति रहेगी।

तालाब में डूबने से आठ वर्षीय बालिका की मौत

माही की गूंज, आम्बुआ।

आम्बुआ थाना क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित तालाब में जानवर चराने गई एक बालिका की तालाब में नहाने के दौरान डूबने से मौत होने की सूचना पर आम्बुआ थाने पर मर्ग कायम किया जाकर जांच जारी है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र में से लगभग 6-7 किलोमीटर दूर हरदासपुर निवासी रमेश जो कि गुजरात मजदूरी करने गया है तथा उसकी लड़की मंजुला रमेश (8) साल रमेश के भाई ननका की लड़की उच्छम के साथ 17 अक्टूबर को जानवर चराने तालाब की तरफगई थी। बेहदी फलिया स्थित तालाब में मंजुला तथा उच्छम नहा रही थी तभी मंजुला गहरे पानी में चली गई तथा डूब गई तब उच्छम भाग कर घर आई तथा खबर दी। जिस पर हम लोग तालाब पर गए तथा तालाब में बच्ची को ढूंढा तथा बाहर निकाला तथा थाने पर सूचना दी। थाना आम्बुआ पर मर्ग क्र. 58/2023 धारा 174 जा.फो. के तहत प्रकरण कायम कर मौका पंचनामा पश्चात शव जसी कर पोस्टमार्टम हेतु भेजा इसके बाद अंतिम संस्कार हेतु परिजनों को सोपा गया।

शैक्षणिक संस्थाओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली

माही की गूंज, आम्बुआ।

18 वर्ष तक के सभी मतदाताओं को मतदान करने व उनमें मतदान के प्रति जागरूकता लाने के लिए साप्ताहिक हाट के दिन मतदाता जागरूकता रैली निकाली। एकीकृत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आम्बुआ कें आह्वान पर शिक्षा परिसर आम्बुआ के बालक-बालिकाएं, स्टाफ सहित जनशिक्षकों ने रैली में शामिल होकर सभी से 17 नवंबर को वोट डालने की अपील की। मतदान करने व सभी को प्रेरित करने की अपील की। एकीकृत शिक्षा परिसर के छात्र छात्राओं जनशिक्षकों और पूरे स्टाफ ने पोस्टर दिखाकर व 'जन जन की यही पुकार वोट देना हमारा अधिकार' के नारे लगा कर किया, जागरुक जिसे ग्रामवासी वा ग्रामीणों ने देखकर मतदान अवश्य करने की शपथ भी ली। रैली में आम्बुआ कस्बा मतदान केंद्र क्रमांक 222, 223, 224, 225 के बूथ लेवल ऑफिसर गोपाल गोयल, रण सिंह रावत, मुकाम डुडवे, राजेंद्र रावत एवं संस्था के प्रभारी प्राचार्य लोंगसिह भयडिया के नेतृत्व में शाला के समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थियों आदि ने रैली को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

आम्बुआ तथा आसपास के क्षेत्र में स्थित पत्थर खदानों में भरा पानी कहीं हादसा न हो जाए

विगत दिनों पेटलावद में एक नन्हीं जान चली गई

माही की गूंज, आम्बुआ। जगराम विश्वकर्मा

संपूर्ण अलीराजपुर जिले तथा आम्बुआ थाना क्षेत्र के अंतर्गत विगत वर्षों से अनेक पत्थर खदानें ग्रामीण क्षेत्रों में चालू है या कई स्थानों पर खनिज नहीं निकलने या निकालने में अधिक खर्च आने अथवा खदान मालिकों ने किन्हीं अन्य कारण से खदानें बंद कर देने से गहरी हो चुकी खदानों में प्रतिवर्ष वर्षा काल में अथाह जल भर जाता है। इस वर्ष वर्षा के अंतिम काल में अधिक वर्षा होने से ऐसी कई खदानें पानी से लबरेज है। जिनमें छोटे-छोटे बच्चे नहाते देखे जा सकते हैं। ऐसे में पेटलावद जैसी कोई घटना घटित न हो जाए। जहां खदान के गड्ढे में नहाने गई बालिका के डूबने से उसकी मृत्यु हो गई। प्रशासन को इस और ध्यान देने की जरूरत महसूस की जा रही है।

संपूर्ण अलीराजपुर जिले में कई स्थानों पर विगत वर्षों में अनेक खनिज पट्टे जिनमें गौंड खनिज यानी की पत्थर खदानों के पट्टे सामान्य या ग्रामीणों के नाम से खनिज विभाग देता है। मगर सीमांकन आदि कार्य राजस्व विभाग करता है। खदान के पट्टे देने की अनेक शर्तें नियम है जिनका परिपालन खनिज विभाग को संबंधित पट्टाधारियों से कराना होता है। मगर देखा गया है कि, खदानें आवंटित कर देने के बाद खनिज विभाग सहित और कोई विभाग भी इधर पलट कर नहीं देखता है। खदानों से माल कितना निकालना है, कितने हेक्टर में निकालना, यह सब उल्लेख पट्टों में रहने के बावजूद खदान पट्टाधारी मनमाने तरीके से खनन करते रहते हैं। जब कभी माल समाप्त हो गया या माल निकालने में लागत अधिक आने लगे, परिवहन आदि महंगा पढ़ने लगता है तब खदानों से माल निकालना तो बंद कर दिया जाता है। मगर बंद खदानों हेतु जो नियम शर्तें जैसे माल निकासी के बाद गढ़ों को धूल, मिट्टी तथा खदानों से निकले अवशेषों से पुनः भरना, खदानों के आसपास तार फैंसिंग, वॉल बाउंड्री, कांटे लगाना आदि कार्य नहीं किया जाता है जिस कारण इन खदानों के गहने गढ़ों में कोई भी जानवर अथवा मानव गिर सकता है विगत वर्षों में पनवानी की एक खदान में बैल गिरकर मर गया था।

बेतहासा खुदाई कर सैकड़ो फीट गहरी हो चुकी पत्थर खदानों में वर्षा मौसम में अथाह पानी भर जाता है जो कि इस वर्ष भी भरा हुआ है। आम्बुआ थाना क्षेत्र के आम्बुआ भीलवट से आगे, भोरदू, आगौनी, हरदासपुर, पनवानी, कुण्ड, वड़ी, खरखड़ी आदि अनेक ऐसे स्थान है जहां नवीन तथा वर्षों पुरानी खदानें हैं जो की पूरी तरह असुरक्षित पड़ी है कई फीट गहराई तक पानी भरा है जिनमें ग्रामीण बच्चे तथा जानवर चराने जाने वाले चरवाहों के साथ ही स्कूल आदि के बच्चे नहाने जाते हैं और स्विमिंग पूल की तरह जंप मार कर अथाह गहरे पानी में नहाते हैं। जिससे कभी भी कोई अप्रिय घटना घट सकती है। प्रत्यक्ष उदाहरण पेटलावद (जिला झाबुआ) की है जहां अभी कुछ दिन पूर्व एक 10 वर्षीय बालिका ऐसी ही खदान के गड्ढे में भरे पानी में नहाते समय डूब जाने से उसकी मृत्यु हो गई। घटना को ध्यान में रखते हुए अलीराजपुर जिले में ऐसी जितनी भी खदानें हैं उन सभी का सर्वे कराकर उन पर तत्काल कार्यवाही की जाना चाहिए ताकि भविष्य में कोई अप्रिय घटना घटित ना हो सके।

जब जिला खनिज अधिकारी अलीराजपुर सतीश नागले से चर्चा की गई तो उन्होंने बताया कि, खदान आवंटन के समय ही सारी शर्तें बता दी जाती है। शर्तें नहीं मानने वालों के पट्टे निरस्त कर दिए जाते हैं। चालू तथा बंद खदानों पर सुरक्षा व्यवस्था खदान मालिक को करना होती है। वही जितेंद्र डुडवे ह.प आम्बुआ ने बताया कि, खदानों के पट्टे खनिज विभाग देता है। राजस्व विभाग सीमांकन करता है। खदानों के बहुत नियम शर्तें है जिन्हें मानना चाहिए।

चुनाव से पहले कांग्रेस को मिला झटका, पूर्व विधायक समेत 2 नेता भाजपा में शामिल

भोपाल।

मध्य प्रदेश में चुनाव से पहले भाजपा ने कांग्रेस को तगड़ा झटका दिया है। कांग्रेस के दो नेताओं ने बुधवार को भाजपा का दामन थाम लिया। राज्य के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और पार्टी के कुछ अन्य नेताओं की मौजूदगी में इन दोनों कांग्रेस नेताओं ने भाजपा की सदस्यता ली है। भाजपा की तरफसे जानकारी दी गई है कि, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा की उपस्थिति में कांग्रेस नेता सिद्धार्थ तिवारी एवं पन्ना जिले की गुनौर विधानसभा से पूर्व विधायक फुंदर लाल चौधरी ने भाजपा ज्वाइन कर लिया है। भाजपा का दावा है कि, दोनों नेताओं ने शिवराज सरकार की गरीब कल्याण योजनाओं एवं संगठन की रीति-नीति से प्रभावित होकर प्रदेश कार्यालय, भोपाल में भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है।

अभी कुछ ही दिनों पहले कांग्रेस ने राज्य में अपने प्रत्याशियों की पहली सूची जारी की थी। इस सूची में 144 नाम थे। इस सूची के सामने आने के बाद से कांग्रेस में कई नेताओं की नाराजगी भी सामने आई थी। जिसके बाद अब दो कांग्रेसी नेता भाजपा में शामिल हो गए हैं। कांग्रेस में टिकट बंटवारे के बाद टिकट नहीं मिलने से नाराज पार्टी नेता कमलनाथ के घर के बाहर जमा हो गए थे। बुधनी से कांग्रेस नेता संतोष शर्मा ने पार्टी का टिकट नहीं मिलने पर कांग्रेस को सबक सिखाने की बात तक कह दी थी। कांग्रेस नेता शारदा खटिक ने भी सागर जिले (एससी रिजर्व) सीट से पार्टी का टिकट मांगा था। लेकिन टिकट नहीं मिलने की वजह से भी नाराज थीं और पार्टी से इस्तीफा देने की बात तक कही थी। कांग्रेस नेता कमलनाथ ने मंगलवार को कांग्रेस के एक कार्यक्रम के दौरान सार्वजनिक मंच से कहा था कि, उन्होंने बहुत पहले गाली खाने की पावर ऑफ एटार्नी दिग्विजय सिंह को दी थी, जो आज तक वैलिड है। कांग्रेस के दो नेताओं के पार्टी ज्वाइन करने के बाद शिवराज सिंह ने इसपर भी प्रतिक्रिया दी है। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, कमलनाथ ऐसा काम ही क्यों करते हैं कि उन्हें गाली खानी पड़े।

कांग्रेस ने देवर- भाभी पर खेला दांव

माही की गूंज, अलीराजपुर।

मध्यप्रदेश में आगामी दिनों में विधानसभा चुनाव होना है। जिसके लिए अब सभी पार्टियां अपने-अपने उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की है। इसी क्रम में मध्यप्रदेश में कांग्रेस ने अपने 144 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की है। इस लिस्ट में 144 प्रत्याशियों को चुनावी मैदान में उतारा है। इस लिस्ट में कुछ ऐसे भी नाम शामिल है जिन्हें पिछली बार हार का सामना करना पड़ा था। लेकिन हैरानी की बात है कि, अलीरापुर में कांग्रेस ने एक ही परिवार के दो लोगों पर भरोसा जताया है। अलीराजपुर जिले में दो विधानसभा सीट है, एक अलीराजपुर और दूसरी जोबट। अलीराजपुर से कांग्रेस ने मुकेश पटेल और जोबट से सेना पटेल को विधानसभा का टिकट दिया है। सेना पटेल, मुकेश पटेल की भाभी है। उधर भाजपा ने नागर सिंह चौहान को प्रत्याशी बनाया है। बता दें, अलीराजपुर से फिलहाल कांग्रेस विधायक मुकेश पटेल है और जोबट से भाजपा की सुलोचना रावत विधायक है।

सोते वक्त डिस्टर्ब करने पर चाची ने 2 वर्ष की भतीजी को मार कर सोफे के नीचे छिपाया

जबलपुर।

मध्य प्रदेश के जबलपुर में सनसनीखेज वारदात सामने आई है। चाची ने 2 वर्ष की भतीजी की मुंह साधकर हत्या कर दी। हत्या की वजह महज इतनी थी कि भतीजी कमरे में आकर डिस्टर्ब कर रही थी। घर वालों से छिपाने के लिए महिला ने बच्ची के शव को सोफे के नीचे रख दिया। घटना का खुलासा तब हुआ जब पुलिस ने बच्ची की तलाश शुरू की और फर्स्ट फ्लोर से शव बरामद किया गया। घटना हनुमानताल पुलिस थाने की सीमा में हुई और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

जबलपुर की अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रियंका शुक्ला ने बताया कि, सकील मंसूरी की 2 वर्ष की

बेटी सोमवार दोपहर को लापता हो गई। उन्होंने बताया कि लड़की के परिवार के सदस्यों ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई और पुलिस ने लड़की के घरवालों के बयान दर्ज किए। एसपी शुक्ला ने बताया कि, उनके बयानों में आशंका पाए जाने पर पुलिस ने घर की तलाशी ली और ड्राइंग रूम में सोफे के नीचे लड़की का शव मिला।

पुलिस ने विस्तृत जांच के बाद बच्ची की चाची अफ्साना से पूछताछ की। पुलिस ने कड़ी पूछताछ के बाद आरोपी महिला अपना अपराध कबूल कर लिया है। आरोपी महिला ने पुलिस को बताया कि लड़की सोमवार दोपहर को उसके कमरे में आई थी। उसने बच्ची को अपने कमरे से बाहर जाने के लिए कहा और उसे थप्पड़ मारा। वह जोर-जोर से रोने लगी। फिर उसे चुप कराने के लिए हाथ से उसका मुंह और नाक साध दिया। बच्ची के मर जाने के बाद उसके शरीर को सोफे के नीचे छिपा दिया। एसपी शुक्ला ने बताया कि, आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है और वे पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं, जिसके बाद उसके खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया जाएगा।

भाजपा प्रत्याशी की तस्वीर लगी घड़ी और राशन बांटा

पार्षद और उनके पति पर दर्ज हुई एफआईआर

माही की गूंज, उज्जैन।

उज्जैन दक्षिण विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं को लुभाने के लिए भाजपा उम्मीदवार मंत्री डॉ. मोहन यादव की तस्वीर छपी घड़ी और राशन बांटने का वीडियो वायरल हुआ था। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि, उज्जैन के वॉर्ड 53 में उक्त सामग्री डॉ. मोहन यादव की समर्थक महिला पार्षद निर्मला परमार और उनके पति लोगों के बीच पहुंचा रहे हैं। कांग्रेस नेता अजीत सिंह ने आरोप लगाते हुए कहा कि, भाजपा नेता खुलेआम आचार संहिता की धज्जियां उड़ा रहे हैं। वहीं घटना का वीडियो वायरल होने के बाद आरोपी भाजपा महिला पार्षद और उनके पति पर एफआईआर दर्ज की गई है। घटनाक्रम से अवगत अधिकारियों ने बताया कि, भाजपा पार्षद निर्मला परमार और उनके पति करण परमार के खिलाफनायब तहसीलदार अनिल मोरे की शिकायत पर थाना नागझिरी में एफआईआर दर्ज की गई है। पार्षद पर आरोप है कि, उन्होंने एक दिन

पहले ही वार्ड में मतदाताओं को खाद्य सामग्री का वितरण किया था। इस वाकए का वीडियो किसी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया था जिसके बाद यह वायरल हो गया। इसके बाद कांग्रेस ने आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाते हुए चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज कराई थी। भाजपा ने मोहन यादव को उज्जैन दक्षिण से अपना प्रत्याशी बनाया है। कांग्रेस ने एक वीडियो जारी कर उज्जैन के वार्ड 53 और 45 में भाजपा प्रत्याशी की तस्वीर लगी घड़ी और राशन बांटने का आरोप लगाया। कांग्रेस ने इसे अचार सहिंता का उलंघन बताते हुए चुनाव आयोग के समक्ष इसकी शिकायत मंगलवार को दर्ज कराई थी। कांग्रेस नेताओं का कहना था कि, मंत्री मोहन यादव के समर्थक दक्षिण विधानसभा में घर-घर जाकर राशन सामग्री के साथ उनकी फोटो लगी घड़ी बांट रहे हैं। प्रत्याशी के समर्थक मतदाता को लुभाने के लिए उपहार बांट रहे हैं।

विधानसभा में कांग्रेस की स्थिति साफ, भाजपा का इंतजार...

माही की गूंज, बरझर। फिरोज खान

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर प्रदेश में आचार संहिता लागू हो चुकी है। जिसके चलते कांग्रेस ने जोबट विधानसभा चुनाव में अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया हैं, पार्टी ने जोबट विधानसभा से पहली बार नगर पालिका अलीराजपुर अध्यक्ष बनी सेना पटेल पर भरोसा जताया है। वहीं भाजपा ने अब तक जोबट विधानसभा से अपना प्रत्याशी घोषित नहीं किया है, जिसका मंथन दिल्ली दरबार में चल रहा है। जबकि 17 नवम्बर को मतदान होना है और एक माह का ही समय शेष है। जोबट विधानसभा चुनाव में भाजपा, कांग्रेस प्रत्याशी सेना पटेल के सामने अपना प्रत्याशी उतारने को लेकर फूंक-फूंक कर कदम रख रही हैं। जबकि भाजपा अपने प्रत्याशियों की चार सुची जारी कर चुकी है। पांचवीं सुची 20 अक्टूबर को आने की अटकलों का दौर हैं जिसमें जोबट भाजपा प्रत्याशी घोषित हो सकता हैं।

भाजपा में इन तीन नेताओं के बीच पेंच फंसा

जोबट विधानसभा में भाजपा में टिकट को लेकर प्रमुख तीन नेता अपनी दावेदारी कर रहे हैं। जिसमें प्रमुख रूप से युवा नेता विशाल रावत ने अपनी दावेदारी को लेकर ताल ठोंक रखी है। जिनके समर्थक भी दावा करते नजर आ रहे हैं कि, विशाल रावत को ही भाजपा प्रत्याशी घोषित करेगी। देखा जाए तो विशाल रावत की उदयगढ़ ओर जोबट में अच्छी खासी पकड़ बताई जा रही है। परन्तु आजाद नगर भाबरा व कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में विशाल रावत की कार्यकर्ता में पकड़ संतोषजनक नहीं है। टिकट लाने के मामले में बताया जा रहा है कि, ज्योतिरादित्य सिंधिया, विशाल रावत को टिकट दिलवाने के लिए प्रयास में लगे हैं। जिसके आम्बुआ में जनसभा में सम्बोधित करते हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया ने साफ संकेत दे दिए थे। वहीं इधर भाजपा से टिकट के दुसरे दावेदार मुकाम सिंह डावर है। जिनकी अच्छी खासी पैठ संघ कार्यालय नागपुर में बताई जाती है ओर टिकट की दौड़ में तीन के पैनल में मुकाम डावर की प्रमुख रूप से दावेदारी मजबूत मानी जा रही है। यदी संघ की चली तो मुकाम सिंह डावर का टिकट पक्का बताया जा रहा है। जिनकी कट्ठीवाड़ा, आमखुट, आम्बुआ व जोबट बेल्ट में अच्छी खासी पकड़ बताई जाती है। तीसरे दावेदारी कर रहे पूर्व विधायक माधव सिह डावर जो वर्तमान में

निगम अध्यक्ष हैं साथ ही शिवराज सिंह चौहान व नरेन्द्र सिंह तोमर का आशिर्वाद प्राप्त है। जिनके भरोसे टिकट की उम्मीद उनके कार्यकताओं को बंधी है। पिछला चुनाव में भी मात्र 21 सौ वोटों से कलावती भूरिया से हारे? थे। साफछवि के माधव सिंह डावर की पकड़ कट्ठीवाड़ा व आजाद नगर भाबरा मे अच्छी बताई जाती है ओर सरपंचों के चहेते नेता है। उदयगढ़ ओर जोबट बेल्ट से माधव सिंह डावर की पकड़ मजबूत नहीं है। शहरी इलाकों के सामान्य वर्ग की बात करें तो माधवसिह डावर ने अपनी ज़मीनी पकड़ बना रखी हैं।

कांग्रेस प्रत्याशी सेना पटेल को मात देने को लेकर विशाल रावत, मुकाम डावर व माधवसिंह डावर के समर्थक अपने-अपने दावे कर रहे हैं कि, टिकट हमारे नेता को मिल जाए तो ही सेना पटेल हारा सकती है अन्यथा सीट हार जाएंगी। सूत्रों की माने तो, इस सीट पर टिकट भाजपा किसी को भी दे परन्तु सभी तीनों को एक होकर चुनाव लडना पड़ेगा अन्यथा सीट भाजपा के हाथों निकल सकती है।

कांग्रेस की ओर से टिकट की दौड़ में रहे दीपक भूरिया, सुरपाल अजनार अभी सेना पटेल को टिकट मिलने के बाद से खामोश है। यह खामोशी इस तरह रही तो सेना पटेल की राह में कोई रोड़े अड़चन नहीं आयेगी। यदी दीपक भूरिया या सुरपाल अजनार में से कोई एक मैदान में कुद गया तो सेना पटेल की सेना को बड़ी मेहनत करनी होगी या मनाना होगा ताकि राह आसान हो जाए। इससे पहले दीपक भूरिया युका जिलाध्यक्ष पद से पहले ही इतिफा दे चुके हैं। ऐसे में आने वाले समय में फार्म भरने वाली तारीख को कहीं मैदान ना सम्भाल ले दीपक भूरिया। परन्तु अभी कांग्रेस के दोनों नेता खामोश है। ऐसे में कयास भी लगाए जा रहे हैं कि, दीपक भूरिया को पहले उप चुनाव में कमलनाथ के कहने पर कान्तिलाल? भूरिया ने मना लिया था लेकिन इस बार? दीपक भूरिया को दिए आश्वासन के बाद टिकट न देना, जिसका गुस्सा इस्तीफा देकर जग जाहिर कर चुके है।

आने वाले समय में देखना हैं कि, सेना पटेल के सामने भाजपा का दावेदार कौन होगा...? कांग्रेस-भाजपा दोनों दलों में टिकट न मिलने के चलते निर्दलीय कौन होगा...? कोन घुसपैठ करेगा...? यह सब आने वाले समय में देखने को मिलेगा। कुछ भी हो दोनों दलों के प्रत्याशी को अपनी ही पार्टी के लोगों से ही डर बना रहेगा।

चुनाव होगा रोचकः क्या भाजपा-कांग्रेस की जीत में रोड़ा बनेंगे मालू और बालु, बागियों के भरोसे निर्मला और भाजपा

मालू के निर्दलीय मैदान में उतरने की घोषणा बाद त्रिकोणी हुआ मुकाबला

माही की गूंज पेटलावद, राकेश गेहलोत

पेटलावद विधानसभा का चुनाव अब रोमांचक मोड़ पर पहुँचता जा रहा है। यहां इस बार मजबूत दावेदारो की संख्या बढ़ती जा रही है। हमेशा से पेटलावद विधानसभा में मुकाबला भाजपा-कांग्रेस का सीधा ही रहा है लेकिन इस बार कांग्रेस के मजबूत बागी उम्मीद्वार के साथ जयस संगठन की दमदार उपस्थित ने चुनाव को चर्चा का विषय बना दिया है। इस बार चुनाव के रोचक होने का मुख्य कारण भाजपा और कांग्रेस के उम्मीद्वार है। जिन्हें जनता इस बार मैदान में नही देखना चाहती थी और नये चेहरे की उम्मीद् के विपरीत दोनों मुख्य दलों ने पुराने चेहरों को मैदान में उतार दिया। भाजपा और कांग्रेस प्रत्याशी को लेकर कार्यकर्ताओ में भी कोई खास चहल-पहल नही है और कार्यकर्ता पार्टी के नाम पर मोर्चा संभाल कर बिना मन के काम कर रहे है।

मालू अकमाल ने चुनाव लड़ने की घोषणा, अन्य दावेदारो के साथ बैठक के बाद लिए निर्णय

बैठक के बाद मालू अकमाल को निर्दलीय मैदान में उतारने का निर्णय से चुनाव हुआ रोचक।

जिला पंचायत उपाध्यक्ष मालू अकमाल डामोर ने कांग्रेस से टिकिट नही होने के बाद निर्दलीय मैदान में उतरने की घोषणा कर दी। सोमवार को पेटलावद में कांग्रेस के खास कार्यकर्ताओ ओर टिकिट के अन्य दावेदारो के साथ बैठक हुई जिंसमे मालू डामोर को चुनाव लड़वाने का निर्णय लिया गया। बैठक के बाद मालू ओर उनके सहयोगीयो ने बताया कि, कांग्रेस के बड़े नेताओं ने धोखे से पूर्व विधायक को टिकिट दिया है जो कही न कही भाजपा के इशारे पर टिकिट दिया गया है। बैठक में निर्दलीय उम्मीद्वार को जीतने की योजना तक बनाई गई है ।

मालू को लेकर बनाया जा रहा था माहौल, भाजपा को भी बड़ा नुकसान

प्रत्याशी तय होने के पहले से भाजपा और कांग्रेस के नेताओं की और मालू की दावेदारी को लेकर माहौल बनाया जा रहा था कि, मालू चुनाव नही लड़ेगा और पीछे हट जाएगा। जिससे बाद मालू समर्थकों में भी असमंजस की स्थिति थी। इस प्रकार का माहौल बनाने के पीछे मालू को समर्थन कर रहे भाजपा-कांग्रेस के नेताओं का मनोबल तोड़ने की कोशिश थी जो मालू के मैदान में उतरने की घोषणा के साथ खत्म हो गई। मालू के मैदान में उतरने से न केवल कांग्रेस बल्कि भाजपा को भी बड़ा नुकसान होने की सम्भवना से इनकार नही किया जा सकता। भाजपा के एक बड़ा धड़ा निर्मला भूरिया के लिए इस चुनाव को अंतिम चुनाव बनाकर नए नेताओं के लिए मैदान खाली करने की कोशिश में है। दूसरी और जयस समर्थन वाली भारत आदिवासी पार्टी के उम्मीद्वार को भी मालू की उपस्थिति का फायदा मिल सकता है जो खुद के वोट बैंक के दम पर चुनाव मैदान में उतर रही है। बाप नेताओं की माने तो उनका अपना वोट बैंक है जो ज्यादा से ज्यादा उम्मीद्वारो के मैदान में होने से उनका वोट बैंक जीत के लिए ओर मजबूत हो जाएगा।

बागियों के भरोसे भाजपा, रामा विकास खण्ड की होगी महत्त्वपूर्ण भूमिका

वेसे तो मालू ओर जयस की उपस्थिति के बाद भाजपा खुद की जीत को लेकर आश्वस्त नजर आ रही है। भाजपा को लग रहा है कि, बागियों की उपस्थिति उसके लिए फायदेमंद है और इसका मुख्य कारण बागी उम्मीद्वार कांग्रेस के वोट बैंक को प्रभावित कर रहा है। इस बार विधानसभा का रामा विकास खण्ड परिणाम में बड़ी भूमिका अदा करेगा। भाजपा-कांग्रेस के उम्मीद्वार हर बार की तरह रामा विकास खण्ड से ही है। तो निर्दलीय मालू इसी क्षेत्र से तीन बार के जिला पंचायत सदस्य रह चुके हैं और वो भी निर्दलीय प्रत्याशी बनकर। आम आदमी पार्टी ने भी रामा से ही प्रत्याशी बनाया है। ऐसे में रामा क्षेत्र की बड़ी भूमिका रहेगी यहां भाजपा को हमेशा बढ़त मिलती रही है और कांग्रेस का भी बड़ा वोट बैंक है। मालू समर्थकों को उम्मीद् है दोनों दलों के वोट बैंक में बड़ी सेंध लगाई जाएगी। दूसरी और पेटलावद विकास खण्ड के तीन में से दो मंडल सारंगी और रायपुरिया में भाजपा को बड़ा गड्ढा है और सिर्फपेटलावद मंडल में भाजपा को बढ़त मिलती है। कांग्रेस के लिए रायपुरिया और सारंगी मण्डल हमेशा प्लस रहे हैं लेकिन मालू अकमाल और बालू गामड़ की उपस्थिति इस बार कांग्रेस के लिए परेशानी का सबब बनेगी। ये दोनों केवल कांग्रेस को नही बल्की भाजपा को भी डेमेज कर रहे हैं।

अंत में ...

अभी नामांकन दाखिल होना शुरू नही हुए है, ऐसे में जोड़-तोड़ की राजनीति भी शुरू हो चुकी हैं और प्रत्याशी अपने-अपने स्तर पर साठ-गांठ करने के लिए भी प्रयासरत हैं। भाजपा को अचानक मैदान में उतरने वाला बागी उम्मीद्वार चौका सकता है इसकी भी चर्चा आम है। मालू अकमाल और बालू गामड़ सहित आप पार्टी को लेकर भी चर्चा है कि, ये अंतिम समय मे एक जुट होकर दोनों मुख्य दलों को चौका सकते हैं। वही कांग्रेस से प्रत्याशी घोषित हुए विधायक वालसिंग मेड़ा के लिए डगर सबसे मुश्किल हो चली है। जिनको कोई खास समर्थन मिलता नही दिख रहा। विधानसभा 2023 का उट किस करवट बैठेगा ये तो एक माह में तय हो जाएगा लेकिन इस माह में समीकरण कई बार बनेंगे बिगड़ेंगे ये तय है।

गूंज असरः पकड़ी अवैध शराब

माही की गूंज, खवासा।

जिले में अवैध शराब का कारोबार किस तरह से फल-फूल रहा है और इसके पीछे किसका संरक्षण है यह आज लिखने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि हम अवैध शराब कारोबार के संबंध में प्रमुखता के साथ अनेकों समाचार प्रकाशित कर चुके हैं। अवैध शराब बिक्री पर अंकुश या कार्रवाई आचार संहिता के साथ ही की जाना है, ऐसा भी नहीं है। उक्त अवैध व्यवसाय पर स्थाई रूप से अंकुश लगाना ही अपनी एक नैतिक जवाबदेही प्रशासन की है।

थांदला थाने की चौकी खवासा व क्षेत्र की बात करें तो चौकी क्षेत्र राजस्थान सीमा से भी सटा है। माही की गूंज में 5 अक्टूबर व 24 अगस्त के अंक में भी नामजद अवैध शराब विक्रय करने वालों के संबंध में समाचार प्रकाशित किए थे। उक्त समाचार की सत्यता पर नायब तहसीलदार एवं थांदला पुलिस के साथ उड़न दस्ते ने अपनी मोहर लगाकर रविवार देर शाम को बामनिया मार्ग पर कमलेश भटेवरा की दुकान पर दबिश दी गई। यहां सामूहिक दल को अवैध शराब बिकते हुए मिली। नायब साहब के

निर्देशन में शराब जप्त करवाकर जप्त की गई शराब का लेखा नायब तहसीलदार पलकेश परमार कागज पर लिखकर वह रवाना हो गए।

वहीं खवासा पुलिस ने विभिन्न प्रकार की शराब की बोतलों की गिनती लगाकर मिली लीटर के साथ गिन करीब 33 लीटर शराब का प्रकरण दर्ज किया है। उक्त दबिश के साथ ही स्थानीय अन्य जगह भी दल दबिश देने पहुंचा लेकिन अन्य शराब के विक्रेता अपने अवैध अड्डे को बंद कर रफू-चक्कर हो गए थे।

गूंज में प्रकाशित समाचार के बाद हुई उक्त प्रशासनिक सामूहिक कार्रवाई की सराहना की जा रही है। साथ ही यह भी चर्चा हो रही है कि, आचार संहिता के दौरान ही इस प्रकार की कार्रवाई कर पुलिस व प्रशासन को खानापूर्ति नहीं करना चाहिए। वरन् इस तरह के चल रहे अवैध शराब के अड्डे खवासा या थांदला ही नहीं वरन् पूरे जिले में चल रहे है। जहां स्थाई रूप से अवैध शराब पर अंकुश लगाने के लिए ऐसी ही सामूहिक कार्रवाई की जानी चाहिए। तथा जिले में चुनाव के दौरान भी बड़ी मात्रा में राजनीतिक दल के नेता अपने-अपने पक्ष में मत हासिल करने के लिए सेव-परमल एवं बड़ी मात्रा में शराब परोसने की परंपरा चल रही है, इस पर भी शक्ति से अंकुश लगाना प्रशासन की अपनी जवाबदारी है।

जमीन विवाद में पिता-पुत्र पर हुआ जानलेवा हमला

हमला करने वालों के खिलाफ धारा 307 के तहत मामला हुआ दर्ज

माही की गूंज, भामल/खवासा

जिले में आदर्श आचार संहिता लग चुकी है एवं विधानसभा चुनाव का आगाज भी हो चुका है। जिले से लगी अन्य राज्य की सीमाओं पर पुलिस मुस्तेदी के साथ पहरा लगा रही है, लेकिन जिले की पुलिस के साथ अन्य राज्य की पुलिस चेक पोस्ट पर चेक कर रही है। इस दौरान बेखोब हो कर किसी पर कोई जान लेवा हमला कर घटना को अंजाम देकर अपराधियो ने पुलिस व्यवस्थाओं पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार खवासा चौकी क्षेत्र के ग्राम परवाड़ा में पिता व पुत्र को सोमवार शाम साढे 7 बजे के करीब धारदार हथियार से जानलेवा हमला किया गया ।जिसमें से एक की हालत गंभीर बताई जा रही है। उक्त जानलेवा हमला जमीन विवाद को लेकर किया गया बताया जा रहा है। घटना की जानकारी पुलिस को भी दी गई लेकिन पुलिस घटना के करीब 1 घंटे बाद मे करीब साढ़े 8 बजे घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने धारदार हथियार से घायल हुए राजू पिता जालु डामर व जालु पिता भुरजी डामर को एक निजी वाहन से तत्काल थांदला उपचार हेतु ले जाया गया। ग्रामीणों ने माही की गूंज को जानकारी देते हुए बताया कि, गांव के ही गामड़ परिवार से किसी जमीन को लेकर विवाद चल रहा था, जिसके लिए उक्त

पिता-पुत्र पर जमीन विवाद में किया धारदार हथियार से हमला, एक की हालात अब भी गंभीर।

जानलेवा हमला किया गया है। उक्त घायल हुए पिता पुत्र के जानलेवा हमले के साथ परिवार परवाडा से राजस्थान के बड़ीसरवा जाने वाले कच्चे मार्ग की ओर ग्वालिया वाले खेत पर सोयाबीन काट रहे थे की गामड़ परिवार के कुछ व्यक्तियों ने दोनों पिता-पुत्र पर तलवार से जानलेवा हमला कर दिया। परिवार की महिलाओं द्वारा बचाओ-बचाओ की गुहार लगाने पर हमलावर भाग निकले। मौके पर ग्रामीणों के पहुंचने के बाद पुलिस को सूचना दी गई।

मामले में खवासा चौकी प्रभारी रजतसिंह गणावा ने बताया कि घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचने के लिए रवाना कर दी गई थी। वही परिवार द्वारा बताया जा रहा है कि, जालू की हालत अब भी गंभीर है। थांदला में प्राथमिक उपचार के बाद ही डॉक्टरों ने जालू को रेफर कर दिया था जिसे उपचार हेतु बड़ोदा ले गए है, अभी तक जालू को होष नहीं आया है, और जिंदगी और मोत से जंग लग लड़ रहा है। वही थांदला पुलिस ने हमलावरो के विरुद्ध धारा 307 का मामला दर्ज किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- संजय भटेवरा । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई टाइटल कोड नंबर- एमपीएचआईएन-76422